वैदिक सिद्धान्त परिचयावली

(वैदिक सिद्धान्त एवं आर्य समाज विषय-प्रश्नोत्तरी स्वरूप में)

ओ३म्

सम्पादक
प्रो० (कर्नल) स्वतन्त्र कुमार
कुलपति

प्रकाशक
गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार- (उत्तराखण्ड)

वैदिक सिद्धान्त परिचयावली

(वैदिक सिद्धान्त एवं आर्य समाज विषय-प्रश्नोत्तरी स्वरूप में)

सम्पादक

प्रो० (कर्नल) स्वतन्त्र कुमार

कुलपति

गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार- (उत्तराखण्ड)

प्रकाशक

गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार- (उत्तराखण्ड)

बैशाखी १३ अप्रैल २००९

प्रकाशक:

वेद विभाग

गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार, उत्तराखण्ड

प्रथम संस्करण:

प्रतियाँ:

मूल्यः - 52/-

भारत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स

ए-१/४ जीवन ज्योति अपार्टमेण्ट

प्रीतमपुरा, दिल्ली-११००३४

फोन नं०- 09212390469

(डीज़ाईनिंग) एम॰ डी॰ आई॰ ग्राफिक्स

124, मुनीश प्लाज़ा, 20, अंसारी रोड

नई दिल्ली-110002

फोन नं॰ 9868649605, 09268368600

अनुशंसा

परम प्रसन्नता का विषय है कि गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय का प्रकाशन विभाग वेदों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को दृष्टि में रखकर इस प्रश्नोत्तरी रूप में पुस्तिका का प्रकाशन कर रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब वेद-प्रचार एवं आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार में अपने प्रारम्भकाल से ही सदा प्रयत्नशील रही है। गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय का जन्म भी आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब की कोख से ही सन् १९०२ में परम पाविनी भागीरथी के तट पर काङ्गड़ी ग्राम के समीप स्वामी श्रद्धानन्द जी के करकमलों द्वारा हुआ था। गुरुकुल काङ्गड़ी अपने प्राचीनकाल से ही वैदिक शिक्षा की ओर अग्रसर रहा है। इसीलिए गुरुकुल में वैदिक शोध संस्थान विभाग की स्थापना सन् १९२० ई० में कर दी गयी थी। आज भी विश्वविद्यालय के सभी विभागों ने प्रकाशन के क्षेत्र में अपनी खास पहचान बनाकर वेद, वैदिक सिद्धान्त एवं वैदिक धर्म संस्कृति का सदा उल्लेखनीय कार्य किया है। वेदों की मूलभूत शिक्षा ही गुरुकुल का आधार है। इसी से भारतीय सभ्यता की जड़े मजबूत होकर विकास को प्राप्त करती हैं और एक अच्छे मानव, परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है।

गुरुकुल के अधिकारियों और शिक्षकों को मेरी ओर से शुभकामनाएँ हैं। आशा है कि वे वेदोक्त धर्म के प्रचार एवं प्रसार में सदा सतत प्रयत्नशील रहते हुए इसी प्रकार रचनाएँ प्रस्तुत कर गुरुकुल के गौरव को बढ़ाते रहेंगे।

सुदर्शन शर्मा
कुलाधिपति
गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

सम्पादकीयम्

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हरिद्वार के समीप गंगा पार कांगड़ी ग्राम के दक्षिण में मुंशी अमनसिंह जी द्वारा प्रदत्त भूमि में १९०२ में कंटकाकीर्ण और जंगली पशुओं से घिरे वन भाग में की थी। कुछ वर्षो में ही वहाँ जंगल में मंगल हो गया। वेदोद्वार, भारतीय संस्कृति का सपना गुरुकुल के रूप में देदीप्यमान हो उठा। गुरुकुल ने अपने प्रारम्भ काल से ही अपनी शिक्षा प्रणाली में अपने विद्वान् प्राध्यापकों से पठन-पाठन् सम्बन्धी पुस्तकें तैयार करवा कर आर्यभाषा (हिन्दी) के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में एक नया आयाम पैदा किया।

गुरुकुल में प्रारम्भ से ही अपना प्रेस था जिसमें वेद, इतिहास भारतीय संस्कृति पर विविध ग्रन्थ प्रकाशित किए जाते रहे और श्रद्धानन्द पुस्तक निधि माला के अन्तर्गत उत्सवों पर जनता के हितार्थ उनको कम मूल्य पर वितरण होता रहा।

प्रस्तुत वैदिक सिद्धान्त परिचयावली नामक पुस्तक भी उसी प्रयास की एक छोटी-सी कड़ी है। चित्रों के द्वारा इसको और संग्रहणीय बनाया गया है। यह जहाँ वैदिक विचारधारा का संप्रेषण करेगी, वहीं भावी पीढ़ी का ज्ञानवर्धन का उनके मन-मस्तिक में अपनी वैदिक-संस्कृति के प्रति जिज्ञासा भी उत्पन्न करेगी। आशा है कि इस पुस्तिका की प्रश्नोत्तरशैली सबको रुचिकर प्रतीत होगी एवं ज्ञानवर्धक भी होगी।

प्रस्तुत पुस्तिका के सम्वर्धन में वर्तमान में 'वैदिक-संग्रहालय' वेद मन्दिर में कार्यरत गुरुकुल के स्नातक महावीर 'नीर' विद्यालंकार ने जो परिश्रम किया है उसके लिए उनका धन्यवाद करता हुआ विश्वविद्यालय के प्रकाशन-विभाग ने जो उपादेय कार्य किया है, उसका आभार मानते हुए यह प्रश्नोत्तरी आपको वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराकर ढोंग-पाखण्डों से दूर करते हुए हमारे प्रयास को सफल करेगी। ऐसी प्रभु से मंगल कामना करता हूँ।

प्रो० स्वतन्त्र कुमार
कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

दो शब्द

वैदिक सिद्धान्त परिचयावली नामक पुस्तक आपके कर-कमलों में पाकर मैं इसलिए प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ कि यह कोई मनोरञ्जन, किस्से-कहानियों, उपन्यास, अथवा इतिहास की पुस्तक न होकर यह अद्भुत ज्ञान, विद्या और अमर सिद्धान्तों का बोध कराने वाली पुस्तक है, भले ही आकार-प्रकार में लघु हो सकती है, अथवा सीमित विषय हो सकते हैं, परन्तु महानतम लक्ष्य तक पहुँचाने का सतत मार्ग प्रशस्त करने वाली है। इसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध उन सिद्धान्तों एवं विद्याओं से है जो अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति कराने में सुतराम समर्थ है। इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहार ही इसकी चेतना है। अपनी महनीय विरासत एवं अमर वेद ज्ञान में अवगाहन कराना भी अपेक्षित है। सृष्टि के आदि में जिन साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने परमात्म कृपा से नित्य ज्ञान को अपनी आत्मा में देखा था उस ज्ञान को महर्षि मनु ने **सर्वज्ञानमयो हि सः, वेदोऽखिलो धर्ममूलम्** और आधुनिक वेदभाष्यकार तथा आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है** यह उद्घोष किया है। अतः वैदिक ज्ञान शुद्ध ज्ञान तथा अमृत स्वरूप है, इसको महर्षि दयानन्द ने वेद विद्या से विरत हुए जनमानस के लिए पुनः प्रचारित कर वैदिक धर्म एवं सिद्धान्तों से परिचित कराया है, इस उद्देश्य से उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं सत्यार्थ प्रकाश जैसे अद्भुत ग्रन्थ भी मानव जाति के लिये दिए।

वेद में विधि और निषेध दोनों तथ्यों से मानव के लिए अवगत कराया है, ताकि वह अपने जीवन को सत्यगामी एवं सत्यासत्य विवेकी बनाये रख सके। वेद वाणी को कल्याणमयी वाक् भी माना है। महर्षि दयानन्द, आर्य समाज एवं गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय का प्रयास रहा है कि वेदों के सिद्धान्त को सर्वजन के लिए सुलभ कराया जाये, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर इस वैदिक सिद्धान्त परिचयावली को गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय ने प्रकाशित कर उसी दिशा में एक उपादेय कार्य है ताकि सभी लोग वेदों, वैदिक सिद्धान्तों एवं आर्य समाज से सम्बन्धित विषयों एवं महापुरुषों से भी परिचित हो सकें और ढोङ्ग, पाखण्ड, आडम्बर, अज्ञान एवं

मिथ्याज्ञान से अवगत होकर जीवन में भटकाव न होवे। प्रयास किया गया है कि सभी सिद्धान्तों का अत्यन्त सरल भाषा एवं सुललित शैली में प्रस्तुति की जा सके। प्रश्नोत्तरी की शैली अपने में रोचक शैली है, प्राचीनकाल में यही शैली पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष के रूप में शास्त्रों में अतिप्रसिद्ध रही है। उन्नीसवीं शती में महर्षि दयानन्द ने इसको भी पुनर्जीवित किया है तथा शङ्कासमाधान अथवा प्रश्नोत्तर के रूप को जागृत किया है। यद्यपि इसमें सभी सिद्धान्तों की प्रस्तुति नहीं है तथापि पल्लवग्राह्यत्व की दृष्टि ही सही यह प्रयास ज्ञानविषयक आयाम देगा ऐसा मैं मानता हूँ।

विश्वविद्यालय में वर्त्तमान मान्य कुलपति प्रो० स्वन्त्रत कुमार का भी यही प्रयास रहता है कि वेद ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के लिए सरल शैली व भाषा का प्रयोग किया जाये। आज यह उन्हीं की प्रेरणा का सुफल है जो आपके हाथों में यह पुस्तक है। आशा है कि ज्ञान के क्षेत्र में उक्त पुस्तक मार्गदर्शक ही नहीं कल्याणकारी भी सिद्ध होगी।

डॉ० रूप किशोर शास्त्री
वेद विभाग, प्राच्यविद्या सङ्काय
गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

बसन्त पञ्चमी
३१ जनवरी २००९

विषय-सूची

ईश्वर

प्र0 1 संसार की रचना किसने की है ?

उत्तर संसार की रचना करने वाला ईश्वर है।

प्र02 ईश्वर साकार है या निराकार ?

उत्तर ईश्वर निराकार है, उसकी कोई मूर्ति या आकार नहीं होता। अतः वह साकार नहीं है। वैदिक धर्मी ईश्वर को निराकार ही मानते हैं, जबकि कुछ लोग उसे साकार।

प्र03 ईश्वर का क्या स्वरूप है ?

उत्तर ईश्वर के स्वरूप और विविध गुणों का वर्णन स्वामी दयानन्द जी ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में किया है। उनमें से मुख्य हैं – ईश्वर सर्वव्यापक अर्थात् सब जगह विद्यमान–(रहने वाला) है। वह सर्वज्ञ अर्थात् सब कुछ जानता है। वह सर्वशक्तिमान अर्थात् अपने कार्यों को करने में किसी की सहायता नहीं लेता। वह नित्य अर्थात् हमेशा रहने वाला है। इस प्रकार ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, नित्य आदि विशेषणों वाला है। यही इस का महान् स्वरूप है।

प्र04 ईश्वर के अन्य गुणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर
1. ईश्वर एक है और चेतन है।
2. वह आनन्दस्वरूप है।
3. वह सर्वान्तर्यामी और सर्वाधार है।
4. वह दयालु है।
5. वह अनादि है अर्थात् हमेशा रहता है, अतः अमर है।

प्र05 **ईश्वर कितने हैं ?**

उत्तर ईश्वर एक ही है जो सब जगह व्यापक है, सब कुछ जानने वाला और सर्वशक्तिमान है। वेद में उपदेश है – "य एक इत् तमुष्टुहि। ऋ06/45/6 अर्थात् जो परमेश्वर एक ही है उसकी ही हे मनुष्य स्तुति कर। अन्यत्र श्वेताश्वतर उपनिषद् में कहा है कि – एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा। परमेश्वर एक ही है वह सब भूतों (प्राणियों) के अन्दर छुपा है, वह सर्वव्यापक व सब प्राणियों के अन्तरात्मा में विद्यमान है।

प्र06 **ईश्वर के कितने नाम हैं ?**

उत्तर ईश्वर के असंख्य नाम उसके गुणों के आधार पर हो सकते हैं। उसे विद्वान् लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। कहा है – "एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।"

प्र07 **ईश्वर को याद रखने से क्या लाभ है ?**

उत्तर यदि हम इस बात को सदा याद रखें कि परमेश्वर सब जगह है, सब कुछ जानता है तो मनुष्य के अन्दर बुरे विचार नहीं आ सकते, वह बुरा कर्म नहीं कर सकता, क्योंकि उसका निवास सारे संसार में है। ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्। यजु0 40/1 उसकी विद्यमानता में मनुष्य बुरे कार्य करने से बचेगा।

प्र08 **ईश्वर सगुण है वा निर्गुण ?**

उत्तर ईश्वर गुणों से सहित सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमान कवि आदि से वह सगुण और जो गुणों से रहित वह निर्गुण कहाता है।

प्र09 **ओ३म् का क्या अर्थ है ?**

उत्तर ओ३म् शब्द तीन अक्षरों से बना है। 'अ', 'उ' और 'म्'। 'अ' का अर्थ है सृष्टिकर्ता, 'उ' का अर्थ है पालनकर्ता और 'म्' का अर्थ है संहारकर्ता। इस प्रकार ओ३म् शब्द ऐसा है, जिसमें ईश्वर के तीनों मुख्य गुण आ जाते हैं।

प्र010 ईश्वर न्याय किस प्रकार करता है ?

उत्तर ईश्वर हम सबके कर्मों को देखता है। उससे कुछ भी छिपा नहीं है। हम जैसे कर्म करते हैं, वैसा ही वह फल देता है। अच्छे कर्मों का फल सुख और बुरे कर्मों का फल दुख देता है। इस प्रकार ईश्वर न्याय करता है।

प्र011 हमें ईश्वर की भक्ति या स्तुति या उपासना क्यों करनी चाहिए ?

उत्तर हमें ईश्वर की भक्ति इसलिए करनी चाहिए, क्योंकि हमारा कर्त्तव्य बनता है कि किसी से कुछ प्राप्त करने पर उसका धन्यवाद करें। ईश्वर ने हमें सब कुछ दिया है। उसने हमें आँखें, कान, हाथ, पैर आदि ऐसी अनमोल चीजें दीं, जिन्हें दुनिया का कोई भी व्यक्ति नहीं दे सकतां। इसलिए हमें भक्ति के रूप में उसका धन्यवाद करना चाहिए।

1. बुराइयाँ दूर होती हैं, आत्मा पापों से मुक्त हो जाता है और आत्मिक शक्ति बढ़ती है।
2. मन पवित्र और शान्त होता है।
3. आज मैडिकल साईंस ने भी प्रमाणित किया है कि प्रभु–भक्ति से मन की जो शान्ति और एकाग्रता होती है, उससे केवल हृदय–रोग और मानसिक रोग ही दूर नहीं होते अपितु और भी कई प्रकार के रोगों में यह बहुत लाभदायक है।

प्र012 ईश्वर की भक्ति कैसे करें ?

उत्तर ईश्वर की भक्ति जल, फूल, फल, प्रसाद आदि चढ़ाकर नहीं, प्रत्युत मन से उसका ध्यान करके एवं उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए भक्ति करनी चाहिए। उसे हमेशा याद करते हुए ईमानदारी से कर्त्तव्य–कर्मों को करना तथा दुखियों की सेवा करना भी उसकी भक्ति ही है।

प्र013 यदि ईश्वर है तो वह दिखाई क्यों नहीं देता ?

उत्तर संसार में बहुत से ऐसे पदार्थ हैं, जिनका अस्तित्व होने पर भी वे दिखाई नहीं देते, परन्तु उनके कार्यों से उनका पता चलता है। जिस प्रकार बिजली नजर नहीं आती, परन्तु मशीनों के चलने पर हम इसके अस्तित्व को मानते हैं। इसी प्रकार इस संसार की महान् रचना को देखकर तथा जीवों के अद्भुत शरीरों को देखकर मानना पड़ता है कि इनका रचनाकार कोई अलौकिक शक्ति वाला ही है। वह अलौकिक शक्ति वाला ईश्वर ही हो सकता है। इस कारण हमें ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करना ही पड़ता है।

ईश्वर दिखाई भी देता है परन्तु इन आँखों से नहीं, पवित्र अन्तःकरण से उसका अनुभव किया जाता है। उसका अनुभव करने का मुख्य साधन योगाभ्यास है।

प्र014 ईश्वर अवतार धारण करता है या नहीं ?

उत्तर ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता, न ले सकता है, क्योंकि वह तो सर्वव्यापक है और जन्म, मरण, सुख–दुख से रहित है। अवतार धारण करने की दशा में तो फिर उसमें ये गुण नहीं हो सकते और तब वह एक देशी हो जायेगा तथा वह ईश्वर नहीं रहेगा। यजुर्वेद कहता है – न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यशः।।

प्र015 मूर्तिपूजा वेद–विरुद्ध क्यों मानी जाती है ?

उत्तर क्योंकि जब ईश्वर निराकार है और अवतार नहीं लेता है तो मूर्ति किसकी ?इसलिए उसकी मूर्ति नहीं बन सकती। मूर्ति को ईश्वर मान कर उसकी पूजा करना अविद्या है। मूर्ति और चित्र की पूजा की जगह हमें महापुरुषों के चरित्र की पूजा अर्थात् आचरण करना चाहिए।

प्र016 यदि एक व्यक्ति अच्छे कर्म करता है तो उसे ईश्वर भक्ति की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर अच्छे कार्य करने के लिए भी सुबुद्धि और प्रेरणा की आवश्यकता होती है। सर्वगुण सम्पन्न, सर्वशक्तिमान,

ईश्वर अच्छे कर्म करने की सुबुद्धि देने वाला एक मात्र स्रोत है, जबकि मनुष्य ईश्वर के समक्ष एक अज्ञानी, अहंकारी और गलतियों का पुतला है। उसे पग–पग पर दिशा निर्देश तथा सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जो केवल ईश्वर से ही प्राप्त होती है। इस संसार में रहते हुए अपने व्यावहारिक जीवन में दुष्कर्म और त्रुटियों से हमारा मन अपवित्र हो जाता है। जब हम ईश्वर भक्ति करते हैं तो उससे हमें सुबुद्धि, सद्प्रेरणा, मार्गदर्शन, उत्साह व मनोबल प्राप्त होता है, जिससे हमारा मन पवित्र और निर्मल हो जाता है। जब महर्षि दयानन्द असीम शारीरिक कष्ट में मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए थे, तब उसी ईश्वर भक्ति द्वारा प्राप्त मनोबल से उन्होंने अत्यन्त शान्त भाव में ''हे प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो'' कहते हुए प्राण त्याग दिये।

आज मैडिकल साईंस भी ECG, EEG, EMG तथा अन्य प्रयोगों द्वारा इस परिणाम तक पहुंच चुकी है कि योग न केवल स्वस्थ शरीर के लिए ही आवश्यक है अपितु वह कई प्रकार के रोगों में भी बहुत लाभदायक है। जैसे Neuro-Endeocrinal, Cardio Vascular तथा Respiratory System के रोग। योग द्वारा मस्तिष्क में ऐसी Electrical (Alpha) waves भी पैदा होती हैं, जिनसे मन को शान्ति मिलती है और हम स्वस्थ रहते हैं। बीमारी भी जड़ से उखड़ जाती है।

ईश्वर भक्ति से ईश्वर की उपासना स्तुति शारीरिक, मानसिक और आत्मिक आनन्द के साथ ईश्वरीय गुण भी प्राप्त होते हैं।

मानसिक तनाव से Immunity System कमजोर हो जाता है, जिससे कैंसर तक के घातक रोग लग जाते हैं। Meditation से हमारा

Immunity System शक्तिशाली बनता है, जिससे हम स्वस्थ रहते हैं।

प्र017 **यदि ईश्वर भक्ति या उपासना से हमारे पाप क्षमा नहीं होते हैं और कर्मों का फल भी मिलना ही है तो ईश्वर भक्ति से क्या लाभ ?**

उत्तर ईश्वर भक्ति या उपासना कोई खरीद–फरोख्त नहीं है कि हमारे द्वारा किये गये पाप–कर्म उसकी भक्ति उपरान्त क्षमा हो जायेंगे। अपितु यह है कि हमारा मन तथा बुद्धि शुद्ध, पवित्र तथा निर्मल हो और हम अपनी गलतियों को ठीक करते हुए उन्हें भविष्य में न दोहरायें। उसकी उपासना का फल यह होता है कि मनुष्य उससे अपना सान्निध्य प्राप्त करता है।

❑❑❑
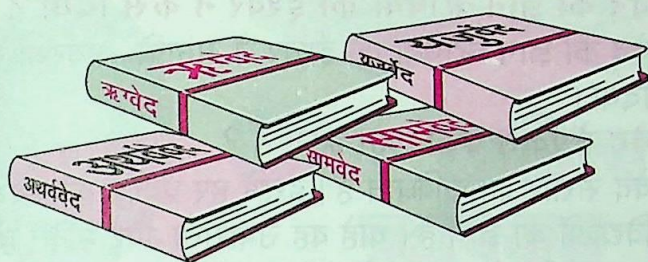
वेद

प्र01 **वेद किसे कहते है ?**

उत्तर वेद वह ईश्वरीय सत्य ज्ञान है, जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों के लिए ऋषियों द्वारा दिया था।

प्र02 **वेद ज्ञान किसने और कब दिया ?**

उत्तर वेद का सत्य ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही दिया। यदि उस समय ईश्वर यह ज्ञान न देता तो मनुष्य स्वयं यह सब कुछ कैसे जान सकता था ?ईश्वर ने यह ज्ञान बीज–रूप में दिया। बाद में अपनी बुद्धि से मनुष्य ने समय–समय पर उस मूल ज्ञान के आधार पर नये–नये पदार्थों का ज्ञान प्राप्त किया और नये आविष्कार भी किये। स्वामी दयानन्द जी इसको आर्यसमाज के पहले नियम में इस प्रकार स्पष्ट करते हैं –

"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।"

प्र03 **वेद–ज्ञान ईश्वर ने किसे दिया तथा उनके क्या विषय हैं ?**

उत्तर ईश्वर ने चार ऋषियों को अलग–अलग वेदों का ज्ञान दिया, जो इस प्रकार हैं –

वेद	ऋषि	विषय
ऋग्वेद	अग्नि	विज्ञान
यजुर्वेद	वायु	कर्म
सामवेद	आदित्य	उपासना
अथर्ववेद	अंगिरा	ज्ञान

प्र04 वेद का ज्ञान ऋषियों को ईश्वर ने कैसे दिया ?

उत्तर वेद का ज्ञान ऋषियों को ईश्वर ने समाधि–अवस्था में दिया।

प्र05 वेद में किस प्रकार का ज्ञान है ?

उत्तर वेद संसार का संविधान है। इसमें हर प्रकार की सत्य विद्याओं का ज्ञान है। चाहे वह उपासना और भक्ति हो या प्रकृति के अटल नियमों का विज्ञान। संसार में किस प्रकार रहना है ?कैसा व्यवहार करना है ?किस का क्या कर्त्तव्य है ?तथा किन–किन नियमों का पालन करना है ?इत्यादि सब बातों का विवेचन वेद में विद्यमान है। संसार को बनाने के साथ ही ईश्वर ने प्राणिमात्र के कल्याण के लिए संविधान के रूप में वेद–ज्ञान प्रदान किया।

प्र06 क्या ईश्वर का ज्ञान बदलता रहता हैं ?

उत्तर नहीं। ईश्वर का ज्ञान सदा एक रस अर्थात् ठीक वैसा ही बना रहता है। उसे अपना ज्ञान बदलने की कोई आवश्यकता नहीं होती।

प्र07 क्या वेदों को सभी मानते है ?

उत्तर वेद संसार की प्राचीनतम पुस्तक है। इसे सभी सनातन धर्मावलम्बी मानते हैं। रामायण व महाभारत यही नहीं पुराण आदि ग्रन्थों ने भी वेदों की महिमा का बखान किया है।

प्र08 वेद–ज्ञान किस–किस के लिए है ?

उत्तर वेद–ज्ञान मानव–मात्र के लिए है। वेद पढ़ने का प्रत्येक व्यक्ति का न केवल अधिकार है, अपितु उसका धर्म भी है, चाहे वह स्त्री या शूद्र भी क्यों न हो। स्वामी जी आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखते हैं –

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना सब मनुष्यों का परम धर्म है।"

वैदिक साहित्य एवं ऋषिकृत ग्रन्थ

प्र01 वैदिक साहित्य के अन्तर्गत कौन से ग्रन्थ आते हैं ?

उत्तर वैदिक साहित्य या ऋषिकृत ग्रन्थों के अन्तर्गत उपवेद, ब्राह्मण, वेदांग, उपांग (दर्शनशास्त्र) तथा उपनिषद् आते हैं।

प्र02 उपवेद कितने हैं, उनके नाम बताओ ?

उत्तर वेदों के अनुसार उपवेद भी चार हैं – जैसे आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थवेद।

प्र03 मुख्य ब्राह्मण ग्रन्थों के नाम बताओ।

उत्तर
ऋग्वेद का ब्राह्मण – ऐतरेय ब्राह्मण
यजुर्वेद का ब्राह्मण – शतपथ ब्राह्मण
सामवेद का ब्राह्मण – साम व ताण्डय महा ब्राह्मण
अथर्ववेद का ब्राह्मण – गोपथ ब्राह्मण

प्र04 वेदांग कितने और कौन से हैं ?

उत्तर वेदांग छः हैं। जो निम्न प्रकार हैं – शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और कल्प। इनके पढ़ने से वेदों को जानने ओर समझने में बड़ी सहायता मिलती है।

प्र05 उपांग या (दर्शनशास्त्र) कौन से हैं?उन्हें किन ऋषियों ने बनाया ?

उत्तर उपांगों को दर्शनशास्त्र या शास्त्र भी कहते हैं। इनमें आत्मा–परमात्मा, प्रकृति, जगत् की उत्पत्ति व मुक्ति आदि पर विचार मिलते हैं ये निम्न हैं –

दर्शन	ऋषि
1. न्याय दर्शन	– गौतम मुनि
2. वैशेषिक दर्शन	– कणाद मुनि
3. सांख्य दर्शन	– कपिल मुनि
4. योग दर्शन	– पतंजलि
5. पूर्वमीमांसा दर्शन	– जैमिनि मुनि
6. उत्तर मीमांसा या वेदान्त दर्शन	– वेद व्यास मुनि

प्र06 उपनिषद् कितने हैं?मुख्य उपनिषदों के नाम लिखो।

उत्तर वैसे तो सम्प्रदाय आदि विशेष के अनुसार उपनिषदों की संख्या अद्यतन 300 का आंकड़ा पा कर चुकी है, किन्तु प्रमाणित ऋषिकृत उपनिषद् 11 ही माने जाते हैं, जो निम्न हैं – 1. ईश 2. केन 3. कठ 4. प्रश्न 5. मुण्डक 6. माण्डूक्य 7. ऐतरेय 8. तैत्तिरीय 9. छान्दोग्य 10. वृहदारण्यक तथा 11. श्वेताश्वतर। इनमें ऋषियों ने ब्रह्म विद्या व प्राण विद्या का अद्भुत वर्णन किया है।

पंच महायज्ञ

प्र01 **यज्ञ किसे कहते हैं ?यज्ञ शब्द का क्या अर्थ है ?**

उत्तर श्रेष्ठ कर्मों का नाम यज्ञ है। यह शब्द यज् धातु से बनता है, जिसके तीन अर्थ हैं – 1. देव पूजा 2. संगतिकरण व 3. दान।

प्र02 **महायज्ञ कितने हैं?उनके नाम लिखो।**

उत्तर महायज्ञ पांच हैं – 1. ब्रह्मयज्ञ, 2. देवयज्ञ, 3. पितृयज्ञ, 4. अतिथि यज्ञ और 5. बलिवैश्वदेव यज्ञ।

प्र03 **ब्रह्मयज्ञ किसे कहते हैं ?**

उत्तर ब्रह्मयज्ञ संध्या को कहते हैं। प्रातः सूर्योदय से पूर्व तथा सायं सूर्यास्त के बाद जब आकाश में लालिमा होती है तब एकांत स्थान में बैठकर ईश्वर का ध्यान करना ही ब्रह्मयज्ञ अथवा संध्या कहलाती है। इससे मन में पवित्र विचार आते हैं। जीवन पवित्र बनता है तथा आत्मिक शक्ति बढ़ती है।

प्र04 **देवयज्ञ क्या है ?**

उत्तर अग्निहोत्र अर्थात् हवन को देवयज्ञ कहते हैं। इससे सम्पूर्ण वातावरण शुद्ध एवं स्वच्छ होता है और अनेक बीमारियों से छुटकारा मिलता है तथा मन में अग्नि की ज्योति से उस ज्योति स्वरूप परमात्मा का ध्यान आता है।

प्र05 **हवन क्यों करना चाहिए ?इसके क्या लाभ है ?**

उत्तर हम दिनभर अपने शरीर के द्वारा वायु, जल और पृथ्वी को प्रदूषित करते रहते हैं, इसके अतिरिक्त आजकल हमारी मशीनों से भी प्रदूषण फैल रहा है, जिसके

कारण अनेक बीमारियां फैल रही है। उस प्रदूषण को रोकना तथा वायु, जल और पृथ्वी को पवित्र करना हमारा परम कर्त्तव्य है। सब प्रकार के प्रदूषण को रोकने का एक ही मुख्य साधन है और वह है हवन। अनुसन्धानों के आधार पर कहा जा सकता है कि एक हवन से आठ किलो मीटर तक की वायु शुद्ध हो जाती है। कुछ वर्ष पूर्व लातूर में भूचाल आया था, जिसके कारण अनेक मनुष्यों एवं पशुओं के शव सड़ रहे थे। अत्यधिक दुर्गन्ध के कारण महामारी फैलने की आशंका बढ़ गई थी। तब सरकार ने बड़े पैमाने पर औषधि–युक्त सामग्री से हवन का आयोजन किया था, क्योंकि सामग्री के अन्दर विषैले कीटाणुओं को नष्ट करने की शक्ति होती है।

हवन में बोले जाने वाले मन्त्रों का भी महत्व है। इनका मन एवं आत्मा पर भी बहुत प्रभाव पड़ता है। इससे मानसिक एवं आत्मिक पवित्रता एवं शान्ति की प्राप्ति होती है। प्रत्सेक ऋतु में ऋतु–अनुकूल सामग्री से यज्ञ करने से ऋतु के कुप्रभाव से बचा जा सकता है।

प्र06 पितृयज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर जीवित माता–पिता तथा गुरुजनों और अन्य बड़ों की श्रद्धा–भक्ति से सेवा एवं आज्ञा–पालन करना ही पितृयज्ञ है।

प्र07 अतिथियज्ञ क्या है ?

उत्तर घर पर आए हुए विद्वान्, धर्मात्मा, सदाचारी, सत्योपदेशक, संत–महात्माओं का भोजन आदि से सत्कार करके उनसे ज्ञान–प्राप्ति करना उनका सत्संग करना अतिथियज्ञ कहलाता है।

प्र08 बलिवैश्वदेव–यज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही बनाए हैं। इन पर दया करना और इन्हें

खाना खिलाना बलिवैश्वदेव–यज्ञ कहलाता है। चींटी से लेकर गाय आदि पशुओं तक के लिए अन्न आदि का दान बलिवैश्वदेव है।

प्र09 इन पंच महायज्ञों में क्या उद्देश्य अन्तर्निहित है ?

उत्तर इन यज्ञों में महान् उद्देश्य छिपा है। इनके द्वारा धर्मात्मा, सत्यनिष्ठ विद्वानों का आदर सत्कार होता है तथा परमात्मा की पूजा भी होती है। लोगों में संगतिकरण से एकता व मेल–जोल की भावना पैदा होती है तथा अच्छे काम करने की प्रवृत्ति से सबकी उन्नति होती है। गरीबों, अनाथों और दुःखियों तथा संस्थाओं की सहायता करने का भाव उत्पन्न होता है। सब प्राणियों के प्रति मित्र–भाव एवं प्रेमभाव हृदय में उत्पन्न होता है।
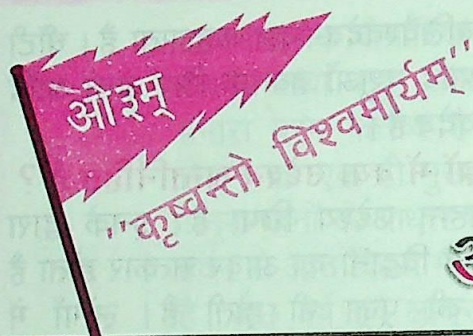
आर्य समाज

प्र01 आर्य समाज क्या है ?

उत्तर आर्य समाज श्रेष्ठ पुरुषों का एक विश्व–कल्याण हेतु संगठन है, यह कोई मत या सम्प्रदाय नहीं है। यह एक वैचारिक आन्दोलन और क्रान्ति है।

प्र02 **आर्य समाज की स्थापना किसने, कब और कहाँ की ?**

उत्तर आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने सन् 1875 में मुम्बई में माणिकचन्द की बगिया में की।

प्र03 **आर्यसमाज की स्थापना के समय भारतवर्ष की क्या दशा थी ?**

उत्तर आर्यसमाज की स्थापना के समय भारतवर्ष अंग्रेजों का गुलाम था। स्त्रियों और शूद्रों (दलितों) पर अत्याचार हो रहे थे। धर्म तथा विद्या के नाम पर अधर्म और अविद्या फैल रही थी। ईसाई और मुसलमान लोग लालच देकर अथवा जोर–जबरदस्ती करके हिन्दुओं को ईसाई और मुसलमान बना रहे थे। हर ओर पाखण्ड और अंध विश्वास था।

प्र04 **स्वामी दयानन्द जी ने आर्यसमाज की स्थापना क्यों की ?**

उत्तर उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना समाज सुधार के लिए, स्त्रियों एवं शूद्रों के उद्धार के लिए, सच्चे वैदिक धर्म के प्रचार के लिए स्वराज्य की स्थापना के लिए तथा अंधविश्वास, पाखण्ड, अधर्म आदि को दूर करने

के लिए की थी। स्वामी जी आर्यसमाज के छठे नियम में लिखते हैं –

''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना।''

प्र05 आर्य समाज ने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए क्या किया ?

उत्तर आर्य समाज ने संसार को प्रत्येक क्षेत्र में मार्ग–दर्शन दिया है –

शारीरिक उन्नति –

शारीरिक उन्नति के लिए प्राकृतिक भोजन, व्यायाम, ब्रह्मचर्य, प्राणायाम, शुद्ध आचार एवं विचार पर बल दिया। कितने ही आर्यसमाज मन्दिरों में औषधालय भी सुचारू रूप से चल रहे हैं।

सामाजिक उन्नति –

स्त्रियों और शूद्रों को समानता तथा वेद पढ़ने पढ़ाने का अधिकार देने की वकालत सब से पहले आर्य समाज ने की और इसे करके दिखाया।

शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक गुरुकुल और डी.ए.वी. संस्थाओं का जाल बिछाया।

सामाजिक उन्नति के लिए अज्ञान, अन्ध–विश्वास, ढोंग, पाखण्ड, दहेज–प्रथा, बाल–विवाह, जात–पात, सती–प्रथा आदि को जड़ से मिटाने के लिये जन–जागृति की लहर चलाई।

समाज–सेवा के कार्यों में जैसे– बाढ़, अकाल एवं भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए आर्यसमाज सदा आगे रहा।

राष्ट्र–भक्ति, आर्यसमाज की महत्वपूर्ण विशेषता रही है। हैदराबाद सत्याग्रह, गौ–हत्या के विरोध में आन्दोलन, हिन्दी सत्याग्रह आर्य समाज के

राष्ट्र–भक्ति के ज्वलन्त उदाहरण हैं कितने ही राष्ट्र–भक्त इसने देश को दिये हैं – जैसे स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, शहीद भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द, पं0 श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि महापुरुष आर्यसमाज की ही देन हैं।

आत्मिक उन्नति –

आत्मिक उन्नति के लिए आर्य समाज साहित्य, उपदेश, प्रवचनों, कथाओं एवं यज्ञों द्वारा महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

धार्मिक विचारों के प्रचार एवं प्रसार के लिए अनेक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं।

शिक्षा–संस्थाओं में भी विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा देने का प्रबन्ध किया गया है।

प्र06 आर्यसमाज के मन्तव्य क्या हैं ?

उत्तर आर्य समाज एक वैचारिक आन्दोलन एवं क्रान्ति है।

1. यह मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति में विश्वास रखता है, अर्थात् शारीरिक, सामाजिक एवं आत्मिक उन्नति।
2. वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा इसमें बीज रूप में सभी ज्ञान–विज्ञानों की विद्याओं का वर्णन है।
3. ईश्वर एक है।
4. आर्यसमाज मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं रखता।
5. आर्यसमाज पुनर्जन्म को मानता है। इसकी मान्यता है कि कर्मों के आधार पर ही कोई योनि मिलती है।
6. पाप या पुण्य कभी क्षमा नहीं होते, उनका फल अवश्य मिलता है।
7. मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र तथा फल भोगने में परतन्त्र है। वर्ण का आधार कर्म है न कि जन्म।
8. आश्रम–व्यवस्था व्यक्ति और समाज की उन्नति का आधार है।

प्र07 **स्वामी दयानन्द के पश्चात् आर्यसमाज का कार्य किन–किन महापुरुषों ने किया ?**

उत्तर स्वामी दयानन्द के पश्चात् आर्य समाज का कार्य स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, पंडित लेखराम, पंडित गुरुदत्त आचार्य रामदेव तथा अन्य कई महापुरुषों ने किया।

प्र08 **शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने क्या कार्य किया ?**

उत्तर शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने जितना कार्य किया शायद ही इतना कार्य किसी अन्य संस्था ने किया हो। आर्यसमाज ने जहां डी.ए.वी. स्कूलों व कॉलेजों की स्थापना की वहां गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, कन्या पाठशाला, प्राथमिक स्कूल, हाईस्कूल, कालेज और विश्वविद्यालयों की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन किया।

प्र09 **इस समय अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में आर्य समाज कितने हैं ?**

उत्तर इस समय संसारभर में आर्य समाजों की संख्या तीन हजार से भी अधिक होगी। दक्षिण अफ्रीका, मारीशस, फिजी, ब्रिटिश, गयाना, तथा दक्षिणी अमेरिका, ट्रिनिडाड, जर्मनी, आदि सभी प्रमुख देशों में आर्यसमाज स्थापित है। आर्य प्रचारक, धर्म प्रचार, हिन्दी प्रचार आदि के कार्यों में वहीं लगे हुए हैं।

प्र010 **क्या तुलसी, पीपल, गाय आदि की पूजा वेद अनुकूल है ?**

उत्तर नहीं। पूजा नहीं अपितु हमें इनकी रक्षा तथा आदर करना चाहिए तथा इनका लाभ लेना चाहिए। शायद कभी पूजा की प्रथा इसलिए आरम्भ हुई ताकि हर व्यक्ति की इन लाभदायक चीजों में श्रद्धा हो जाये।

प्र011 **सृष्टि कितने तत्वों से बनी हुई है ?**

उत्तर पाँच तत्वों से जो निम्न हैं – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।

प्र012 **इन्द्रियाँ कौन–कौन सी हैं।**

उत्तर इन्द्रियाँ 2 प्रकार की हैं –

1. ज्ञानेन्द्रियाँ – जिनके द्वारा हमें ज्ञान प्राप्त होता है, जैसे आंख, कान, नासिका, वाक् और त्वचा कुल पांच हैं।

2. कर्मेन्द्रियाँ – जिनके द्वारा हम कुछ कार्य करते हैं, जैसे हाथ, पैर, मुख, मूत्रेन्द्रिय और गुदेन्द्रिय ये भी कुल पांच होती हैं।

गुरुकुल शिक्षा–प्रणाली

प्र01 वर्तमान युग में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मन्त्रदाता कौन कहे जा सकते हैं ?

उत्तर वर्तमान युग में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती कहे जा सकते हैं क्योंकि उन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में इस शिक्षा प्रणाली का वर्णन किया है।

प्र02 गुरुकुल शिक्षा से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में छात्र घर न जाकर न रहकर गुरुकुल में ही गुरु के पास आश्रम में विद्या अध्ययन करता है। गुरुकुल को गुरुकुल इसलिए कहा जाता है कि इसमें अमीर–गरीब सभी के लिए एक समान नियम होते हैं। रहन–सहन, खान–पान, पहनावा आदि सब समानता पर आधारित होता है।

प्र03 गुरुकुलों के खोलने के क्या कारण थे ?

उत्तर महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु के पश्चात् सन् 1886 में उनके स्मारक के रूप में डी.ए.वी. संस्था की स्थापना की गई। उसमें अन्य विषयों की शिक्षा देने के साथ ही हिन्दी, संस्कृत, वेदादि शास्त्रों की उच्च शिक्षा देने का निश्चय किया गया था। किन्तु इस कॉलेज शिक्षा को अभीष्ट न मानते हुए कुछ महानुभावों ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः प्रारम्भ करने का निश्चय किया, जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) स्वामी दर्शनानन्द (पं० कृपाराम) जी आदि प्रमुख थे।

प्र04 **गुरुकुलों में क्या पढ़ाया जाता है ?**

उत्तर गुरुकुलों में शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थी जीवन का पूर्णरूपेण विकास करना है। वह अन्दर और बाहर से मजबूत बनें। गुरुकुल में ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन आवश्यक होता है। आजकल गुरुकुलों में वेदादि शास्त्रों की शिक्षा के अतिरिक्त यथासम्भव ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा एवं कम्प्यूटर आदि की शिक्षा का प्रबन्ध किया जाता है। यज्ञ–हवन, योगासन आदि उनकी दिनचर्या के मुख्य अंग होते है।

प्र05 **इस समय चल रहे कुछ प्रमुख गुरुकुलों के नाम बताओ।**

उत्तर गुरुकुल कांगड़ी के अतिरिक्त इस समय आर्ष गुरुकुल झज्जर, दयानन्द मठ दीनानगर, वेद विद्यालय गौतम नगर (दिल्ली) गुरुकुल ऐटा, गुरुकुल करतारपुर, कन्या गुरुकुल दाधिया, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल (मेरठ), कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस तथा कन्या गुरुकुल देहरादून आदि प्रमुख गुरुकुल हैं। इन गुरुकुलों के अतिरिक्त अन्य अनेक गुरुकुल शिक्षा प्रसार में लगे हुए हैं। इन गुरुकुलों में हजारों छात्र विद्या ग्रहण कर रहे हैं। वस्तुतः ये गुरुकुल ही आर्य समाज की भट्टियां हैं।

प्र06 **गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक कौन थे ?**

उत्तर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। उन्हें महात्मा मुंशीराम जी के नाम से भी जाना जाता है।

प्र07 **गुरुकुल कांगड़ी के लिए भूमि किस महान् विभूति ने दान की थी ?**

उत्तर गुरुकुल कांगड़ी के लिए नजीबाबाद (बिजनौर) के

रईस जमींदार मुन्शी अमनसिंह जी ने 1300 बीघे भूमि दान दी थी। जिसकी रजिस्ट्री उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभी पंजाब के नाम की थी।

प्र08 **गुरुकुल खोलने का विचार सबसे प्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी के मन में कब और क्यों आया ?**

उत्तर श्री मुंशीराम जी को सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करते वक्त यह विचार आया जिसने उनके मन को व्याकुल कर डाला।

प्र09 **आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव कब पास हुआ ?**

उत्तर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव 26 नवम्बर 1898 को पास किया तथा महात्मा मुंशीराम जी को इस कार्य के लिए 30 सहस्र रुपया एकत्र करने को कहा। लाला मुंशीराम ने 8 अप्रैल 1900 को 40 हजार रुपये एकत्रित करके आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में जमा करा दिये।

प्र010 **सर्वप्रथम गुरुकुल कहां और कब खोला गया ?**

उत्तर सबसे प्रथम गुरुकुल गुजरांवाला में 19 मई 1900 में वैदिक पाठशाला के रूप में खोला गया।

प्र011 **क्या महात्मा मुंशीराम गुजरांवाला गुरुकुल से संतुष्ट थे ?**

उत्तर स्वामी श्रद्धानन्द जी (महात्मा मुंशीराम) गुरुकुल को ऐसे स्थान पर खोलनां चाहते थे जहां पर्वत की उपत्यका और नदी का तट विद्यमान हो।

प्र012 **इसके लिए उन्होंने क्या–क्या प्रयत्न किये ?**

उत्तर इस उद्देश्य के लिए उन्होंने कई बार हरिद्वार क्षेत्र का दौरा किया। अन्त में पंजाब से यहां कनखल निवासी लाला भारामल के वंशज श्री किशन प्रसाद व श्री वेणीप्रसाद जी के सत्प्रयत्नों से उनका यह कार्य पूर्ण हुआ और चौ0 अमन सिंह जी ने गुरुकुल को भूमि प्रदान की।

प्र013 कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना कौन से सन् में हुई ?

उत्तर गुरुकुल कांगड़ी की विधिवत् स्थापना 4 मार्च 1902 को गुजरांवाला से कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना हुई। यह गुरुकुल नीलगिरि चण्डी पर्वतमाला की उपत्यका कांगडी गाँव के दक्षिण में तथा गंगा के तट पर बसा था। आज भी देखा जा सकता है। उन प्राचीन स्मृतियों को।

प्र014 गुरुकुल के क्या उद्देश्य थे ?

उत्तर संसार में पुनः तपस्वी व तेजस्वी राष्ट्रभक्तजनों का जन्म हो। ईश्वर के प्रति आस्तिक भावों का सबमें वास हो। लोप हो रही वेद–विद्या का प्रचार–प्रसार हो। ब्रह्मचर्य की शिक्षा का पुनः प्रतिष्ठापन हो। आचार्य और शिष्य के प्रगाढ़ सम्बन्ध वाली शिक्षा का प्रसार हो।

प्र015 गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः स्थापित करने में सर्वाधिक योगदान किसका रहा ?

उत्तर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः स्थापित करने का श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द जी को दिया जाना चाहिए। स्वामी जी ने अपना सारा जीवन ही नहीं अपितु अपना घर–बार तथा अपने दोनों पुत्रों (हरिश्चन्द्र एवं इन्द्रचन्द) को गुरुकुल को समर्पित कर दिया।

प्र016 इस समय गुरुकुल कांगड़ी किस स्थान पर स्थापित है ?

उत्तर कांगड़ी में स्थित गुरुकुल जब सन् 1924 में गंगा की बाढ़ से ध्वस्त हो गया था तो कुछ वर्षों तक मायापुर वाटिका, कनखल (डा0 हरिराम आर्य इण्टर कॉलेज वर्तमान) परिसर में चलता रहा, किन्तु सन् 1930 में पूर्ण रूप से गुरुकुल वर्तमान परिसर में आ गया था। इस गुरुकुल को उच्च शिखर तक पहुंचाने में मुख्याधिष्ठाता विश्वम्भर नाथ जी, आचार्य रामदेव जी,

इन्द्र जी, आचार्य प्रियव्रत जी, श्री अभयदेव जी तथा प्रो0 सत्यव्रत जी ने अथक कार्य किया।

प्र017 **आज की परिस्थितियों में गुरुकुल के विषय में बताइये।**

उत्तर आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपनी शताब्दी पार कर वर्तमान कुलपति प्रो॰ स्वतन्त्र कुमार जी के नेतृत्व में शिखर की ओर अग्रसर है। आधुनिक समय में जितने विषय अन्यत्र पढ़ाये जाते हैं, उन सबकी व्यवस्था यहां समुचित रूप से देखी जा सकती है। ब्रह्मचर्याश्रम पद्धति के साथ–साथ विश्वविद्यालय के सभी विभाग गुरुकुल की प्रतिष्ठा को बढ़ा रहे हैं।

प्र018 **क्या गुरुकुल कांगड़ी के अपने कोई प्रतीक चिह्न हैं ?**

उत्तर क्यों नहीं, गुरुकुल की अपनी एक प्रारम्भ से ही अलग पहचान है। यहां हम गुरुकुल की मोहर (प्रतीक चिह्न), कुलपताका गीत, कुलगीत व कुलवन्दना उद्धृत कर रहे हैं, जो गुरुकुल में विशिष्ट कार्यक्रमों की शोभा है।

प्र019 **कुल–पताका गीत तथा रचयिता का नाम लिखो।**

उत्तर रचयिता –प्रियहंस
(वैद्य निरन्जनदेव जी आयुर्वेदालंकार)
जिसकी चरण धूलि ने पाला, जहां किया विद्या मधुपान।
उस प्यारी कुल माता को है, मेरा बारम्बार प्रणाम।।
वन–पर्वत में नदी–नीर में, माता जो पाया संदेश।
तेरी पुण्य–पताका लेकर, फैला दूंगा देश विदेश।।

प्र020 **कुल–गीत तथा लेखक का नाम लिखो।**

उत्तर लेखक – श्री बुद्धदेव विद्यालंकार।
प्राणों से हमको प्यारा 'कुल' हो सदा हमारा।
विष देने वालों के भी, बन्धन कटाने वाले।
मुनियों का जन्मदाता, कुल हो सदा हमारा।।

कट जाय सिर न झुकना, यह मन्त्र जपने वाले।
वीरों का जन्मदाता, कुल हो सदा हमारा।।
स्वाधीन्य–दीक्षितों पर, सब कुछ बहाने वाले।
धनियों का जन्मदाता, कुल हो सदा हमारा।।
निज जन्म–भूमि भारत, को क्लेश से छुड़ा कर।
गौरव वढ़ाने वाला, कुल हो सदा हमारा।।
तन मन सभी न्यौछावर, कर वेद का संदेशा।
जग में ले जाने वाला, कुल हो सदा हमारा।।
हिम–शैल तुल्य ऊँचा, भागीरथी सा पावन।
भटकों का मार्गदर्शक, दुखियों का हो सहारा।।
आजन्म ब्रह्मचारी, ज्योति जगा गया है।
अनुरूप पुत्र उस का, कुल हो सदा हमारा।।

प्र021 कुल–वन्दना तथा लेखक का नाम लिखो।

उत्तर लेखक – श्री वागीश्वर विद्यालंकार।
जय जय जननि! कुलदेवी, तुझ को बार–बार प्रणाम है।
यह मंजु अंजलि प्रेममय, अर्पित तुझे अभिराम है।।
महिमा हिमालय की शिखायें गा रहीं तेरी स्वयं।
भागीरथी की बीचियों में, स्पष्ट तेरा नाम है।।
हम देखते तुझ में सदा, नव प्रेम का उल्लास है।
हमको मधुरतम गोद ही तेरी परम विश्राम है।।
तेरे विशद आकाश की, स्वाधीनता में हम पले।
स्वर्गीयता मिश्रित जहां उज्ज्वल उषा का धाम है।।
तेरे वनों की स्तब्धता में दिव्य कोई राग है।
सब ओर से मानो बरसता, पुण्य का परिणाम है।।
तूने ह्रदय मोती पिरो कर, प्रेम के दृढ़ सूत्र में,
अनुपम बनाई यह हमारी, चारु मुक्तादाम है।।
तू ही बजाती वीणा वह, जिसके कि हम सब तार हैं।
जो तार सारे एक स्वर हों, कह रहे अविराम है।।
हम हैं सदा तेरे, हमारी तू ह्रदयवर वासिनी।
सम्बन्ध यह तेरा हमारा, नित्य है निष्काम है।।

प्र022 वैदिक राष्ट्रीय गीत अर्थ सहित लिखो।

उत्तर ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्रीः धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रीर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। यजु0 22–22

'ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरि–दल–विनाशकारी।।
होंवे दुधारु गौवें, वृष अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल–फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग–क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।।

हे जगदीश दयालु ब्रह्मन् प्रभु! सुनिये विनय हमारी।
हों ब्राह्मण उत्पन्न देश में, धर्म कर्म व्रतधारी।।
क्षत्रिय हों रणधीर महारथी धनुर्वेद अधिकारी।
धेनु, दूध वाली हों सुन्दर वृषभ तुंग बलधारी।।
हों तुरंग गति चपल, अंगना हो स्वरूप गुण वाली।
विजयरथी पुत्र जनपद के रत्न तेज बलशाली।।
जब ही जब करे कामना जलधर जल बरसावें।
फलें पकें बहु सुखद वनस्पति, योग–क्षेम सब पावें।।
द्विज वेद पढ़ें सुविचार बढ़े, बल पाय चढ़ें सब ऊपर को।
अविरूद्ध रहें ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को।।
ध्रुव धर्म धरें, पर दुख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को।
दिन फेर पिता वर दे सविता, हम आर्य करें भूमण्डल को।।

स्वास्थ्य

प्र01 स्वास्थ्य क्या है ?

उत्तर शरीर का रोग–रहित होना तथा मन का भी शान्त होना स्वास्थ्य कहलाता है।

प्र02 मानव–शरीर किन तत्वों से बना है ?

उत्तर मानव शरीर अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी व आकाश – इन पाँच तत्वों से बना है। इन्हे ही पंचतत्व कहते हैं।

प्र03 शरीर को स्वस्थ कैसे रखा जा सकता है ?

उत्तर स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है –

1. ब्रह्मचर्य, 2. शुद्ध जलवायु, 3. व्यायाम, 4. शांत एकाग्र मन, 5. प्राकृतिक आहार, 6. गहरी नींद।

प्र04 ब्रह्मचर्य क्या है और इसके क्या लाभ हैं ?

उत्तर शरीर की बहुमूल्य धातु अर्थात् वीर्य की रक्षा करना ही मुख्य रूप से ब्रह्मचर्य कहलाता है। ब्रह्मचर्य से मन पवित्र हो जाता है, आलस्य दूर होता है और कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों एवं अन्तःकरण में शक्ति आती है। ब्रह्मचर्य के पालन से ही स्वामी दयानन्द, हनुमान् एवं भीष्म पितामह में ओज एवं महान् तेज था। इसे ही शरीर की उर्जा कह सकते हैं।

प्र05 व्यायाम से क्या लाभ हैं ?

उत्तर व्यायाम से शरीर के सभी अंग, मांसपेशियाँ, धमनियाँ, जोड़ आदि स्वस्थ, सक्रिय एवं लचीले बनते हैं। इस से शरीर में रक्त–संचार ठीक बना रहता है। वृद्धावस्था का आक्रमण शीघ्र नहीं होता।

प्र06 व्यायाम कैसा होना चाहिए ?

उत्तर शारीरिक व्यायाम कई प्रकार के होते हैं, जैसे – दौड़ना, खेलना, दण्ड–बैठक, तैरना आदि। परन्तु सबसे लाभदायक व्यायाम, प्रौढावस्था में भ्रमण, योगासन, प्राणायाम एवं मालिश है।

प्र07 योग आसनों तथा प्राणायाम में किन सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर योग आसन हों या प्राणायाम, अपनी शक्ति के अनुसार ही करें।

1. यह खुले पार्क में प्रातः काल करें तो बहुत अच्छा है। वैसे सायंकाल भी कर सकते हैं।

2. यदि खाना खाया हो तो कम से कम 3 घंटे बाद योग क्रियायें करें।

3. योग क्रियाये करते समय अपना ध्यान श्वास या शरीर पर ही रखें। जितना एकाग्र हो कर करेंगें, उतना ही शारीरिक, आत्मिक और मानसिक लाभ होगा।

4. प्राणायाम कई प्रकार के हैं। परन्तु पहले हम अनुलोम विलोम, कपालभाती, नाड़ी शोधन तथा भ्रामरी प्राणायाम से ही आरम्भ करें।

5. सूर्य नमस्कार में अनेक आसनों का समावेश है।

6. योग क्रियाओं का पूरा लाभ लेने के लिये अपने मन को प्रसन्न रखने की कोशिश करें।

7. प्राकृतिक शाकाहारी भोजन का बहुत महत्व है, इससे शारीरिक तथा मानसिक शान्ति मिलती है। स्वस्थ शरीर और शांत मन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

8. योग क्रियायें पहले 15–20 मिनट से आरम्भ करके धीरे–धीरे बढ़ाकर योग आसन 30 मिनट और प्राणायाम 15 मिनट करें तो काफी हैं।

9. नाड़ी शोधन में हठ करके श्वास अन्दर या बाहर अधिक देर बिल्कुल न रोकें जैसे आराम से हो सके वैसे ही करें।

प्र08 योग आसनों तथा प्राणायाम के क्या लाभ हैं ?

उत्तर जिस प्रकार घर की नाली को झाड़ू लगाकर साफ करते हैं, उसी प्रकार योग आसन और प्राणायाम से हमारी रक्त–नाड़ियाँ साफ होती हैं। सांस पेशियों में लचक आती है। शरीर फूलसा हल्का हो जाता है, भूख बढ़ती है। कॉलोस्ट्रोल कम होता है।

1. हमारे फेफड़ों के फैलने तथा सिकुडने की लचक बढ़ती है, जिस से फेफड़े अधिक से अधिक आक्सीजन लेते हैं तथा कार्बन डाईऑक्साइड निकालते हैं तथा रक्त प्रवाह बढ़ता है।

2. रोग नाशक शक्ति का विकास होता है। कई रोग दूर हो जाते हैं।

3. हमारा स्वास्थ्य मेंरुदंड की लचक पर निर्भर करता है। हमारा नाड़ी सूत्र यहां से ही होकर जाता है। योग से मेरुदंड में लचक आती है।

4. दूसरे व्यायामों में शरीर को अधिक शक्ति खर्च करनी पड़ती है। जबकि योगासनों तथा प्राणायाम में शरीर में शक्ति का संचार होता है।

5. मानसिक शक्ति का विकास होता है। इससे हम रोग मुक्त होते हैं।

6. योगी लोग कड़ी सर्दी में भी नंगे शरीर रह लेते हैं तथा अपनी नब्ज पर नियन्त्रण कर लेते हैं। हृदय गति को भी इच्छानुसार कर लेते हैं। यह सब योग, प्राणायाम तथा भक्ति से ही सम्भव है।

(**नोट:** ध्यान रखें कि योगासनों एवं प्राणायाम आदि क्रियाओं को किसी योग्य योगगुरू के निर्देशन में करना चाहिए।)

प्र09 मालिश के क्या लाभ हैं ?

उत्तर इससे रक्त–प्रवाह तेज होता है, मांसपेशियाँ बलवान् होती हैं और शरीर में स्फूर्ति आती है। मालिश के और भी अनेक लाभ हैं।

प्र010 शुद्ध प्राकृतिक आहार क्या है और इसके क्या लाभ हैं ?

उत्तर संतुलित शाकाहारी भोजन ही शुद्ध प्राकृतिक आहार है। इसके द्वारा शरीर को सभी आवश्यक तत्व प्राप्त हो जाते हैं और शरीर नीरोग रहता है। अधिक मिठाइयों, तले हुए खाद्य पदार्थों, माँस, अण्डे, शराब आदि के सेवन से अनेक रोग हो जाते हैं।

प्र011 क्या माँसाहार संतुलित भोजन है ?

उत्तर माँसाहरी भोजन संतुलित भोजन नहीं है। यह शरीर के लिए बहुत हानिकारक है, क्योंकि –

1. मनुष्य शरीर की रचना शाकाहारी जीवों की भाँति है न कि माँसाहारी जीवों की भाँति।
2. माँसाहारी भोजन स्वाभाविक नहीं। यह बहुत देर से पचता है।
3. माँसाहारी भोजन में रेशा नहीं होता। इस कारण यह पाचन–क्रिया के लिए हानिकारक है।
4. यह भोजन तामसिक है। इससे हमारे मन में क्रूरता और हिंसा की प्रकृति पैदा होती है।
5. पशुओं का खाना–पीना शुद्ध न होने के कारण उनका मांस कई बार जहरीला हो जाता है।
6. अण्डों तथा मांसाहारी भोजन में कॉलोस्ट्रोल और वसा बहुत अधिक मात्रा में होते हैं, जो कि हृदय–रोग, मधुमेह, कैंसर आदि भयानक रोगों के मुख्य कारण हैं।
7. यह एक थोथी कल्पना है कि मांसाहारी भोजन शरीर को सशक्त बनाता है। योगिराज श्रीकृष्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, भीष्म पितामह, महारथी अर्जुन जैसे बलवान् और तेजस्वी कौन होंगे, ये सब शाकाहारी ही तो थे।

प्र012 धूम्रपान और पान–मसाले का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव होता है ?

उत्तर ये सभी स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक हैं।

मैडिकल सर्वे के अनुसार साल भर में 4,00,000 मृत्यु केवल धूम्रपान से होती हैं। तम्बाकू में कई प्रकार के जहरीले रसायन होते हैं। इनमें निकोटिन सबसे अधिक हानिकारक है। यह हृदय रोग और कैंसर का मुख्य करण है। आजकल अधिकतर युवक विद्यार्थी गुटके आदि खाते हैं जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है सभी को इनसे बचना चाहिए।

प्र013 आहार–सम्बन्धी मुख्य सावधानियाँ क्या है ?

उत्तर आहार के सम्बन्ध में निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए –

1. भोजन शरीर रक्षा एवं स्वास्थ्य का साधन है केवल स्वाद के लिए नहीं। अतः केवल स्वाद की दृष्टि से कुछ नहीं खाना चाहिए।

2. हमारा भोजन पौष्टिक तत्वों की दृष्टि से संतुलित होना चाहिए।

3. जहां तक हो सके भोजन ताजा हो। देर तक पड़े हुए भोजन में गुण कम हो जाते हैं।

4. दिन में तीन बार से अधिक भोजन न करें। बार–बार खाने से पाचन शक्ति में विकार आ जाते हैं।

5. जो भोजन सूंघने तथा स्वाद में ठीक न हो, वह नहीं खाना चाहिए।

6. सप्ताह में एक समय का उपवास या फलाहार स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है।

7. भोजन करते समय ध्यान भोजन पर ही रखें, उस समय टी0वी0 देखना, अखबार पढ़ना या अन्य कार्य नहीं करना चाहिए।

8. भोजन पर ध्यान न होने से भोजन के पचने में रुकावट आती है।

9. दोपहर के भोजन के बाद 15–20 मिनट बाई करवट लेटने से खाना जल्दी पचता है।

10.अधिक ठण्डी या अधिक गर्म कोई भी चीज न खायें। यह दाँतों तथा पाचन क्रिया के लिए ठीक नहीं है।

11. भोजन करने से कम से कम एक घंटा पूर्व और एक घंटा बाद में पानी पीना चाहिए। पानी सदैव बैठ कर पीना चाहिए।

12. भोजन को अच्छी तरह चबाकर खाना चाहिए। इससे मुह की लार भोजन को पचाने में सहायक बन जाती है। तभी तो कहा है "Drink the solids and eat the liquids"

13. रात को सोने से दो घंटे पहले भोजन कर लेना चाहिए।

14. भोजन को शान्त मन से खाना चाहिए। क्रोध में भोजन खाने से शरीर में अम्लता बढ़ जाती है। हमारी संस्कृति में भोजन–भजन आदि सब बैठ कर किया जाता है। किन्तु आज सभी कुछ खड़े होकर किया जा रहा है जो कि स्वास्थ्य और धन दोनों की ही हानि करता है।

प्र014 मन का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि–मुनियों ने मन के शरीर पर प्रभाव को जानते हुए मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बल दिया था। तभी तो कहा है –"मन के हारे हार है, मन के जीते, जीत।" मन जितना एकाग्र और तनाव रहित होगा, शरीर उतना ही स्वस्थ होगा। मन का तनाव बढ़ता है – भय, चिन्ता, क्रोध, झूठ, निराशा आदि से। इसलिए हमें इनसे बचना चाहिए। एकाग्र मन से प्रभु की भक्ति करके ही हम इन बुराइयों से दूर रह सकते हैं।

भारतीय संस्कृति

प्र01 भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताएँ / मान्यताएँ क्या हैं ?

उत्तर भारतीय संस्कृति की निम्न विशेषताऐं / मान्यताऐं हैं –

1. यह वेदों पर आधारित है और प्राचीनतम संस्कृति है।
2. ईश्वर में दृढ़ विश्वास।
3. ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' – सारे विश्व को एक परिवार मानती है, जन्म से कोई ऊँच–नीच नहीं है।
4. ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' – सारे विश्व को श्रेष्ठ बनायें।
5. ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' – प्राणि मात्र की सुख की कामना।
6. ''मातृदेव पितृदेव'' – माता–पिता और गुरु पूजनीय हैं,
7. ''मनुर्भव'' – नेक (अच्छा) इन्सान बनने का उपदेश देती है। बिना किसी जात–पात सम्प्रदाय और राष्ट्रीयता के भेद–भाव के।
8. पुनर्जन्म – कर्मफल पर विश्वास।
9. निष्काम कर्म – कर्त्तव्यनिष्ठा, सेवा भाव, आदर सत्कार त्यागवाद आदि।

प्र02 संस्कृति और सभ्यता में क्या अन्तर है ?

उत्तर संस्कृति का सम्बन्ध विचारों और संस्कारों से है, जबकि सभ्यता का सम्बन्ध हमारे रहने–सहने के ढंग,

तौर–तरीके, रीति–रिवाज से है।

प्र03 **क्या नाच–गाना, रंगमंच और नाटक आदि हमारी संस्कृति के अनुकूल है ?**

उत्तर यह सब कला के भिन्न–भिन्न अंग हैं, इनमें कोई दोष नहीं वरन् दोष है उनके प्रस्तुतीकरण में। जैसे भारतीय कला केन्द्र इन कलाओं के माध्यम से रामायण तथा कृष्ण लीला का सुन्दर रूप प्रस्तुत करती है परन्तु इन्हीं कलाओं से पाश्चात्य संस्कृति में डिस्को डांस दिखाते हैं।

❑❑❑

अन्य विषय

प्र01 भारत देश का सर्वप्रथम नाम क्या था ?

उत्तर भारत देश का सर्वप्रथम नाम आर्यावर्त था, क्योंकि आर्य ही इस देश के मूल–निवासी थे।

प्र02 आर्यों के मूल स्थान के विषय में विदेशियों के क्या विचार हैं?उनमें क्या त्रुटियां हैं?

उत्तर विदेशी लेखकों का यह कहना है कि आर्य लोग बाहर से आये हैं। इससे वे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि उनकी ही तरह भारत आर्यों का देश नहीं है और वह भी विदेशी आक्रमणकारी हैं। यह विचार दोषपूर्ण है। आर्य ही इसके मूल निवासी हैं। आर्यों से पूर्व यहां कोई नहीं रहता था।

प्र03 क्या प्राचीन काल में आर्य लोग अनपढ़ और गंवार थे ?

उत्तर नहीं। आर्य लोग अनपढ़ और गंवार नहीं थे, प्रत्युत विज्ञान और विद्या के क्षेत्र में आज से भी अधिक शिखर पर पहुंचे हुए थे। आयुर्वेद प्राचीन आर्यों की ही देन है, जो सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा–पद्धति है। रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में शस्त्र–शास्त्रों और विमान आदि विद्याओं का वर्णन मिलता है। ज्योतिष, गणित आदि विषयों में भी प्राचीन आर्य लोग निपुण थे। उन्होंने सूर्य, चन्द्र तथा ग्रह–नक्षत्रों की गतियों का जो वर्णन किया है, उसे आधुनिक खगोल–शास्त्री भी मानने लगे हैं।

प्र04 **हकीकत राय का बलिदान कैसे हुआ ?**

उत्तर एक बार मदरसे में मुसलमान बच्चों ने माँ दुर्गा को गाली दी। उस पर हकीकत राय ने कहा – "जैसे मेरी दुर्गा है, वैसी ही बेगम फातिमा है।" मुसलमान बच्चों ने मौलवी से हकीकत राय की शिकायत की। वह यह सारा मामला काजी (उस समय का जज) के पास ले गये काजी ने निर्णय सुनाया कि हकीकत या तो मुसलमान बन जाये अथवा इसे मौत की सजा दी जाये। बालक हकीकत राय ने अल्पायु होते हुए भी इस्लाम को नहीं, मौत को ही स्वीकारा। इस तरह बालक हकीकत राय का बलिदान हुआ।
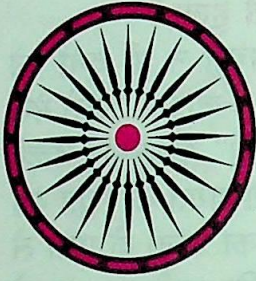
राष्ट्रीय ध्येय
National Mottoes in Sanskrit

1.	भारत सरकार	सत्यमेव जयते
2.	लोक सभा	धर्मचक्रप्रवर्तनाय
3.	उच्चतम न्यायालय, भारत	यतोधर्मः ततो जयः
4.	गुरूकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय	ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत
5.	ऑल इण्डिया रेडियो (आकाशवाणी)	बहुजनहिताय
6.	दूरदर्शन	सत्यं शिवं सुन्दरम्
7.	थलसेना (आर्मी)	सेवा अस्माकं धर्मः
8.	वायु सेना (एयर फोर्स)	नभः स्पृशं दीप्तम्
9.	जल सेना (नेवी)	शं नो वरूणः
10.	इण्डियन नेशनल सांइस अकादमी (INSA)	हवयामिर्भगः सवितुर्वरेण्यम्
11.	भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) अकादमी मसूरी	योगः कर्मसु कौशलम्
12.	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)	विद्ययाऽमृतमश्नुते
13.	नेशनल कौन्सिल फॉर टीचर एजुकेशन (NSTE)	गुरूः गुरूतमोधाम
14.	केन्द्रीय विद्यालय संगठन	तत्वं पूषन्नपावृणु
15.	सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकेण्डरी एजुकेशन (CBSE)	असतो मा सद्गमय
16.	दिल्ली विश्वविद्यालय	निष्ठा धृतिः सत्यम्
17.	डाक व तार विभाग	अहर्निशं सेवामहे
18.	भारतीय जीवन बीमा निगम	योगक्षेमं वहाम्यहम्
19.	श्रम मन्त्रालय	श्रम एव जयते

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र

वर्ण-व्यवस्था

प्र01 **वर्ण-व्यवस्था क्या है ?**

उत्तर सामाजिक व्यवस्था के लिये सामाजिक कार्यों को चार भागों (वर्णों) में बाँटा गया है। इसी व्यवस्था का नाम वर्ण-व्यवस्था है। सब वर्ण बराबर हैं।

प्र02 **वर्ण कितने है और कौन-कौन से हैं ?**

उत्तर वर्ण चार हैं - 1. ब्राह्मण, 2. क्षत्रिय, 3. वैश्य, एवं 4. शूद्र।

प्र03 **वर्ण-व्यवस्था कब और किसने शुरु की ?**

उत्तर यह व्यवस्था वेदों के आधार पर महर्षि मनु ने लाखों वर्ष पूर्व प्रारम्भ की थी।

प्र04 **ब्राह्मण के गुण-कर्म क्या हैं ?**

उत्तर पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना-लेना, एवं निन्दा-स्तुति, सुख-दुख, मान-अपमान की प्रत्येक परिस्थिति में धर्म पर दृढ़ रहना, धर्म प्रसार करना इत्यादि ब्राह्मण के गुण-कर्म हैं। उसमें - सम्य, दान, क्षमा, शील, अक्रूरता, त्रपा, अघृणा, तप आदि गुण होने चाहिए।

प्र05 **क्षत्रिय किसे कहते हैं ?**

उत्तर जो न्याय से प्रजा की रक्षा करे, शूरवीर हो साहसी व निर्भय हो व यज्ञ करे-करवाये, वह क्षत्रिय कहलाता है।

प्र06 **वैश्य कौन कहलाता है ?**

उत्तर जो पशु-पालन, विद्या और धर्म आदि के लिए धन का व्यय करे और व्यापार तथा खेती से धन कमाए एवं

विपत्तियों के समय राष्ट्र की धन से सहायता करे, वह यज्ञ करे व दान दे तथा अनेक भाषाएं सीखें वह वैश्य कहलाने योग्य है।

प्र07 शूद्र किसे कहते हैं ?

उत्तर जो विद्या ग्रहण नहीं कर सकता हो और निन्दा, ईर्ष्या, अभिमान आदि दुर्गुणों को छोड़ कर, अन्य वर्णों की ईमानदारी से सेवा करता है, वही शूद्र कहलाता है। मनु के अनुसार शूद्र सहित सभी वर्ण महत्वपूर्ण हैं।

प्र08 ब्राह्मण को ही उच्च क्यों माना जाता है ?

उत्तर वैसे तो सभी वर्णों का समाज–व्यवस्था में समान महत्व है। अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए सभी आर्य (श्रेष्ठ) हैं, परन्तु विद्वान् होने के कारण ब्राह्मणों को उच्च माना जाता है। क्या हम आज भी संन्यासियों, विद्वानों और वैज्ञानिकों को उच्च सम्मान नहीं देते?मनु की परिभाषा अनुसार ये ही सच्चे ब्राह्मण और ऋषि हैं। जन्म से भले ही वे कुछ भी हों। ऐसे ही लोग ज्ञान का संचय करके अविद्या तथा अन्धकार को दूर करते और सब में ज्ञान–ज्योति को फैलाते हैं।

प्र09 इस व्यवस्था ने ऊँच–नीच के भेद का बीज बोकर शूद्रों के साथ अन्याय किया है, यह कथन कहां तक सत्य है ?

उत्तर यह कथन सर्वथा असत्य है, शूद्र को कभी नीच नहीं समझा जाता था। वर्ण–व्यवस्था तो केवल भिन्न–भिन्न कार्यों को बाँटने की व्यवस्था थी। यदि शूद्र का पुत्र अपने गुण, कर्म और स्वभाव ब्राह्मणों के समान बना ले तो वह भी ब्राह्मण बन सकता है।

प्र010 इतिहास में से इस का कोई उदाहरण दीजिए।

उत्तर इसके उदाहरण तो सैंकड़ों हैं। जैसे विश्वामित्र क्षत्रिय–कुल के थे, और वाल्मीकि जन्म से भील थे। ये सभी अपने गुणों के कारण महर्षि बन गये। इस प्रकार अन्य भी बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। इतना

ही नहीं पौराणिकों की भागवत पुराण भी चाण्डाल तक को भगवान की भक्ति करने का अधिकार देती है।

प्र011 **कुछ राजनीतिक दल मनु का विरोध करते हैं कि उन्होंने जात–पात का बीज बोया। क्या यह सत्य नहीं ?**

उत्तर उनका यह कहना केवल वोटों के लिए स्वार्थ है। आज यदि एक हरिजन सेना में भर्ती हो जाता है तो आज के स्वार्थी राजनेताओं के अनुसार वह हरिजन ही रहता है, जबकि मनु के अनुसार वह क्षत्रिय है। इसी प्रकार यदि कोई ब्राह्मण का लड़का सफाई–कर्मचारी बन जाये तो भी आज के नेता उसे शूद्र नहीं ब्राह्मण ही कहते हैं, जबकि मनु के अनुसार वह शूद्र है। अब आप बताइये कि मनु का सिद्धान्त न्याय–युक्त है या आज के ढिंढोरची नेताओं का ?

प्र012 **आर्यसमाज ने शूद्रों के लिए क्या किया है ?**

उत्तर जो शूद्र विद्वान् बनकर ब्राह्मण बनना चाहता है, आर्यसमाज उनका स्वागत करता है। इस समय भी कई जन्म से शूद्र विद्वान् बनकर आर्यसमाज में पुरोहित का कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाज सबको भाई समझता है और खान–पान में भी कोई भेद–भाव नहीं रखता। "दलितोद्धार" आर्यसमाज के मुख्य कार्यों में से एक है।

प्र013 **क्या शूद्र भी आर्य कहलाता है ?**

उत्तर हाँ, शूद्र भी आर्य ही होता है। जो कोई भी अपने कर्त्तव्यों को ईमानदारी से करता है, वह आर्य है। जो कर्त्तव्यों से दूर भागता है, वह अनार्य है। चाहे वह ब्राह्मण–कुल में ही क्यों न जन्मा हो।

प्र014 **वर्ण शब्द का अर्थ क्या है ?**

उत्तर वर्ण शब्द का अर्थ है जिसे उसके गुण कर्म देखकर चुना जाये।

प्र015 **वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जाति भेद प्रचलित होने से क्या नुकसान हैं ?**

उत्तर जातिभेद या जात–पात के कारण वैर एकता नष्ट होकर आपस में फूट के बीज उभर आयें हैं।

प्र016 **वर्ण–व्यवस्था का आधार क्या है ?**

उत्तर वर्ण–व्यवस्था गुण, कर्म एवं स्वभाव के आधार पर ही निश्चित की जाती है। इसलिए वर्ण–व्यवस्था का आधार गुण, कर्म एवं स्वभाव ही हैं।

❑❑❑

आश्रम–व्यवस्था

प्र01 **आश्रम–व्यवस्था क्या है ?**

उत्तर वेद में मनुष्य की आयु की परिधि सौ वर्ष कही गई है। अतः अपनी सौ वर्ष की आयु में मनुष्य को कब क्या करना चाहिए, इसके लिए आयु को चार बराबर भागों में बांटने की व्यवस्था है। ऐसी व्यवस्था को आश्रम–व्यवस्था कहते हैं।

प्र02 **आश्रम कौन–कौन से हैं ?**

उत्तर आश्रम चार है –
ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम।

प्र03 **प्रत्येक आश्रम कितने–कितने वर्ष का होता है ?**

उत्तर मनुष्य की आयु को साधारणतः सौ वर्ष अनुमानित करके इसके पच्चीस–पच्चीस वर्ष के चार भाग किये गये हैं –

ब्रह्मचर्य,	25 वर्ष तक
गृहस्थ,	25 से 50 वर्ष तक
वानप्रस्थ	50 वर्ष से 75 वर्ष तक
संन्यास	75 वर्ष से जीवन के अन्त तक।

प्र04 **क्या प्रत्येक व्यक्ति के लिए चारों आश्रमों का अपनाना अनिवार्य है ?**

उत्तर प्रथम तीन आश्रम प्रत्येक व्यक्ति को अपनाने चाहिए, किन्तु संन्यास आश्रम का अधिकारी वही होता है, जिसने अपने आप पर संयम कर लिया हो, काम–क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार आदि दोषों को दूर कर लिया हो और जिसके अन्दर ज्ञान एवं वैराग्य प्रबल हो।

प्र05 **ब्रह्मचर्य आश्रम क्या है ?**

उत्तर विद्या एवं शारीरिक शक्ति का संचय ब्रह्मचर्य आश्रम में किया जाता है। माता–पिता प्रत्येक बालक एवं बालिका को आयु के साधारणतः आठवें वर्ष में उपनयन संस्कार कराके विद्याध्ययन के लिए गुरु के पास भेजते हैं। ब्रह्मचर्य से अच्छे संस्कार, तेज और शक्ति की प्राप्ति होती है। विद्यार्थी काल को ही ब्रह्मचर्य काल कहा जाता है।

प्र06 **ब्रह्मचर्य से शक्ति तथा तेज प्राप्त करने वाले किसी व्यक्ति का कोई उदाहरण दीजिए।**

उत्तर भीष्म पितामह, हनुमान् और स्वामी दयानन्द इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

प्र07 **गृहस्थ आश्रम क्या है ?**

उत्तर ब्रह्मचर्य का पालन करने के पश्चात् विवाह करके संसार के लिए अच्छी सन्तानें उत्पन्न करके, उनका ठीक से लालन–पालन करना गृहस्थाश्रम है। यही आश्रम सारी ईच्छाओं की पूर्ति का साधन है।

प्र08 **गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ क्यों कहा जाता है ?**

उत्तर वैसे तो सभी आश्रम श्रेष्ठ हैं, किन्तु गृहस्थ को इसलिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि सभी आश्रम इसी पर निर्भर करते हैं। वेदों में इसको 'ओदन' कहा गया है इसकी बड़ी महिमा बताई गई है।

प्र09 **वानप्रस्थाश्रम क्या है ?**

उत्तर गृहस्थाश्रम के कर्त्तव्यों को पूर्ण करने के पश्चात् आयु का जो तीसरा भाग है, उसे ही वानप्रस्थाश्रम कहते हैं। इस आश्रम में मनुष्य को सत्संग, स्वाध्याय, साधना तथा प्रभु–भक्ति में मन लगाना चाहिए।

प्र010 **वानप्रस्थाश्रम में वन में जाकर रहने का विधान क्यों है ?**

उत्तर वन में जाकर रहना इसलिए ठीक समझा जाता था, क्योंकि इससे संसार के प्रलोभन, काम, क्रोध, लोभ,

मोह, अहंकार आदि मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते। इस से वानप्रस्थी अपने कर्त्तव्यों का ठीक पालन कर सकता है।

प्र011 क्या आज यह सम्भव है ?

उत्तर आजकल पूर्ण रूप से यह सम्भव नहीं है किन्तु जैसे ज्वालापुर स्थित 'आर्य वानपुस्थ व दिरच्म सन्यासाश्रृम' बने हुए हैं। इच्छुक व्यक्ति वहाँ रहते हुए अपने तृतीये आश्रृम का पालन करते हैं। यही नहीं हम घर में रहते हुए ही कमल की भांति संसार के प्रलोभनों से ऊपर उठकर अपने जीवन में सुधार ला सकते हैं। हाँ, कभी–कभी किसी अच्छे आश्रम में प्रकृति के पास जाकर कुछ मास रहकर सत्संग, साधना तथा शुद्ध वायुमण्डल का लाभ उठाना चाहिए।

प्र012 संन्यास आश्रम क्या है ?

उत्तर जीवन के अन्तिम चरण में ज्ञान व वैराग्य प्राप्त करके सम्पूर्ण संसार के कल्याण के लिए जिस आश्रम को अपनाया जाता है, उसे संन्यास आश्रम कहते हैं।

प्र013 संन्यासी बनने का कौन अधिकारी होता है ?

उत्तर जिसने ज्ञान व वैराग्य को प्राप्त किया हो और इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, वही संन्यासी बनने का अधिकारी है, चाहे वह वानप्रस्थी, गृहस्थी या ब्रह्मचारी ही क्यों न हो।

प्र014 क्या सीधे ब्रह्मचर्य से संन्यास में जाया जा सकता है?

उत्तर हाँ, दसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण महर्षि दयानन्द सरस्वती का है, जिन्होने ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यासाश्रृम में प्रवेश किया। किन्तु उस समस्त ऐषणाओं का त्याग करना पड़ता है। उसका समस्त जीवन समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए होता है।

❑❑❑

कर्मफल–सिद्धान्त

प्र01 **कर्मफल–सिद्धान्त क्या है ?**

उत्तर कर्मफल–सिद्धान्त बताता है कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक कर्म का फल अवश्य मिलता है। अच्छे कर्मों का फल सुख और बुरे कर्मों का फल दुख के रूप में मिलता है।

प्र02 **कर्म–फल को कौन भोगता है ?**

उत्तर कर्म–फल शरीर के द्वारा जीवात्मा भोगता है।

प्र03 **कर्म के कितने भेद होते हैं ?**

उत्तर सामान्यतया कर्म के दो भेद होते हैं – 1. सकाम, 2. निष्काम।

प्र04 **सकाम का अर्थ क्या है ?**

उत्तर किसी भी लौकिक फल को लक्ष्य करके जो कर्म किया जाता है उसको सकाम कर्म कहते हैं।

प्र05 **निष्काम कर्म कौन से हैं ?**

उत्तर परब्रह्म परमेश्वर की प्राप्ति के लिए जो कर्म किए जाते हैं, जिन कर्मों में लौकिक फल की कुछ भी इच्छा नही होती, उनको निष्काम कर्म कहते हैं।

प्र06 **कर्मों का फल कब मिलता है ?**

उत्तर कुछ कर्मों का फल तुरन्त मिल जाता है, कुछ का कुछ समय के बाद, तो कुछ कर्मों का फल दूसरे जन्म तथा अन्य जन्मों में भी मिलता है।

प्र07 क्या अच्छे कर्म करने पर बुरे कर्मों के फल माफ हो जाते हैं ?

उत्तर नहीं। प्रत्येक कर्म का फल अलग–अलग रूप में मिलता है। दोनों प्रकार के कर्मों के फल अवश्य मिलते हैं। कोई भी कर्म माफ नहीं होता, न पूजा–पाठ से, न गंगा–स्नान से न ईसा या मुहम्मद साहिब पर विश्वास लाने से।

प्र08 जब कर्मफल मिलना ही है तो फिर ईश्वर की प्रार्थना एवं उपासना आदि से क्या लाभ है ?

उत्तर ईश्वर की प्रार्थना और उपासना से बुद्धि तथा मन पवित्र होता है, शुद्ध विचार और भावनाएं जागती हैं तथा आत्मिक शक्ति प्राप्त होती है। इनसे मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। इसके साथ ही अहंकार समाप्त हो जाता है और मृत्यु का भय भी छूट जाता है।

प्र09 जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है या परतन्त्र है ?

उत्तर जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है, परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। वह जैसे चाहे कर्म कर सकता है, परन्तु कर्म का फल उसे अपनी इच्छा से प्राप्त नहीं होता।

प्र010 कर्मों के फल कौन देता है ?

उत्तर कर्म–फल देने का अधिकार केवल ईश्वर का है। जीवात्मा का फल पर कोई अधिकार नहीं है।

प्र011 क्या ईश्वर हमारे भविष्य को जानता है ?

उत्तर हमारा भविष्य अपने कर्मों पर आधारित होता है। जो हमने कर्म किये हैं, उनके फलों के विषय में ईश्वर जानता है। परन्तु जो कर्म अभी हुए ही नहीं हैं, उनके फलों को जानने का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है।

प्र012 क्या हमारा भविष्य निश्चित है ?

उत्तर नहीं, भविष्य को हम अपने कर्मों से बनाते हैं, जैसे हम

कर्म करते जायेंगे, वैसा ही भविष्य बनता जायेगा। हमारे वर्तमान कर्म ही भविष्य का निर्माण करते हैं।

प्र013 क्या ज्योतिष विद्या सत्य है ?

उत्तर ज्योतिष विद्या दो प्रकार की है – फलित एवं गणित। गणित ज्योतिष के आधार पर हमें पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों–उपग्रहों और उनकी गतियों का ज्ञान होता है। यह एक वैज्ञानिक सत्य–विद्या है। परन्तु फलित ज्योतिष वाले भविष्य बताने की बात करते हैं। जैसा हम ने ऊपर के प्रश्न में स्पष्ट किया है, कि जब भविष्य ही निश्चित नहीं तो वे उसके विषय में क्या बतायेंगे ? यह केवल पाखण्ड है।

आर्यों का त्रैतवाद

प्र01 त्रैतवाद से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर यह एक वैदिक विचारधारा है, जिसके अनुसार तीन तत्व ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि माना जाता है। इसी सिद्धान्त को त्रैतवाद कहते हैं। कोई अद्वैत कोई द्वैत आदि मानते हैं।

प्र02 अनादि किसे कहते हैं ?

उत्तर जो तत्व हमेशा से चले आ रहे हैं और जिनका न आरम्भ है और न अन्त है अर्थात् जो कभी नष्ट नहीं होते हैं, उन्हीं को अनादि कहते हैं।

प्र03 ईश्वर, जीव और प्रकृति में क्या अन्तर है ?

उत्तर **ईश्वर** – एक हैं उसका अस्तित्व सदा रहता है। वह चेतन और आनन्द–स्वरूप अर्थात् शारीरिक सुख–दुख से हमेशा परे है।

जीवात्मा – अनेक हैं। इनका सीमित अस्तित्व भी हमेशा रहता है। जीवात्मा चेतन है परन्तु आनन्द स्वरूप नहीं है। यह कर्मों के अनुसार सुख–दुख को भोगता है। यह ईश्वर को प्राप्त करके आनन्द को प्राप्त करता है।

प्रकृति – जड़ है। इसका भी अस्तित्व सदा रहता है परन्तु यह न चेतन है और न इसमें आनन्द होता है।

प्र04 प्रकृति किस काम आती है ?

उत्तर प्रकृति जगत् बनाने का उपादान कारण (सामग्री) है। यह स्वयं न घटती है, न बढ़ती है। हाँ, इसका रूप

बदलता रहता है। प्रकृति चेतन के द्वारा ही गति प्राप्त करती है, जिससे यह सारी सृष्टि बनती है। परमेश्वर जीवात्मा के लिए प्रकृति द्वारा ही सृष्टि–रचना करता है।

प्र05 **जीवात्मा क्या है ?**

उत्तर जीवात्मा अनेक हैं और वे चेतन तथा अनादि हैं। इनका कोई बनाने वाला नहीं है। जीवात्मा अल्पज्ञ और एकदेशी है। जीवात्माओं का न जन्म होता है और न ही ये मरती हैं। कर्मफलों के भोग के लिए ईश्वर इन्हें शरीर देता है यही जन्म कहलाता है। परन्तु वस्तुतः जीवात्मा न जन्म लेता है और न मरता है। केवल शरीर ही मरता है।

प्र06 **जीवात्मा एवं प्रकृति को किसने बनाया है ?**

उत्तर ये अनादि हैं। इनका कोई बनाने वाला नहीं है।

प्र07 **यदि ईश्वर जीव और प्रकृति को नहीं बना सकता तो वह सर्वशक्तिमान कैसे है ?**

उत्तर ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। किन्तु सर्वशक्तिमान् का अर्थ यह कदापि नहीं कि वह सब कुछ कर सकता है। सर्वशक्तिमान् का अर्थ होता है – जिसे अपने कार्य करने में किसी की सहायता की आवश्यकता न हो। ईश्वर अपने कार्य अपने आप करता है और किसी से सहायता नहीं लेता इसीलिए वह सर्वशक्तिमान् है।

प्र08 **ईश्वर के अपने कार्य कौन से हैं ?**

उत्तर ईश्वर के चार कार्य हैं – सृष्टि को बनाना, सृष्टि का पालन–पोषण करना, समय आने पर दुनिया का पलों में संहार करना तथा जीवों को कर्मानुसार फल देना। जो जीवात्मा जैसा कर्म करता है, उसे वह वैसा ही फल देता है।

❑❑❑

प्र01 **धर्म क्या है ?**

उत्तर किसी भी वस्तु के स्वाभाविक गुणों को उसका धर्म कहते हैं, जैसे अग्नि का धर्म उसकी गर्मी और तेज है। गर्मी और तेज के बिना अग्नि की कोई सत्ता नहीं।

प्र02 **मनुष्य का धर्म क्या है ?**

उत्तर धर्म की परिभाषा के अनुसार मनुष्य का स्वाभाविक गुण मानवता है। यही उसका धर्म है। इसके आचरण के लिए उसे अच्छे कर्म करने चाहिए और अपने कर्त्तव्यों को पालन करना चाहिए। जिन कर्मों के द्वारा मनुष्य का जीवन अच्छा बनता है, उन्नत होता है, वे कर्म धर्म शब्द से अभिहित होते हैं।

प्र03 **धर्म के दस लक्षण कौन से हैं ?**

उत्तर महर्षि मनु के अनुसार धर्म के दस लक्षण निम्नलिखित हैं –

1. धृति – कठिनाईयों से न घबराना।
2. क्षमा – शक्ति होते हुए भी दूसरों को माफ करना।
3. दम – मन को वश में रखना अर्थात् इन्द्रियों का दमन करना।
4. अस्तेय – चोरी न करना, मन, वाणी और कर्म से किसी के भी धन का लालच न करना। अर्थात् अ+स्तेय। बाह्म व आन्तरिक स्वच्छताएं।
5. शौच – शरीर, मन और बुद्धि को पवित्र रखना।
6. इन्द्रिय निग्रह – इन्द्रियों (आँख, वाणी, कान, नाक और त्वचा) को अपने वश में रखना और वासनाओं से बचना।

7. बुद्धि–बुद्धिमान् बनना अर्थात् प्रत्येक कर्म को सोच–विचार कर करना और अच्छी बुद्धि को धारण करना।

8. विद्या – ज्ञान ग्रहण करना।

9. सत्य – सच बोलना, सत्य का आचरण करना।

10. अक्रोध – क्रोध न करना। क्रोध को वश में रखना। इन दस नियमों का पालन करना ही धर्म है। यही धर्म के दस लक्षण हैं। वस्तुतः ये 10 लक्षण किसी भी समाज व राष्ट्र की आचार संहिता है।

प्र04 धर्म और मत में क्या अन्तर है ?

उत्तर धर्म मानव मात्र के लिए होता है। यह ईश्वर का बताया हुआ मार्ग है। यह किसी व्यक्ति विशेष द्वारा बनाया नहीं होता। इसके उलट मत व्यक्तियों द्वारा चलाई गई विचारधारायें होती हैं।

प्र05 इस का कोई उदाहरण दीजिए।

उत्तर वैदिक धर्म किसी विशेष व्यक्ति का बनाया हुआ नहीं है। यह सृष्टि के आरम्भ से है। वेद पर आधारित यह मानवता का संदेश देता है। सो यह धर्म है। परन्तु इस्लाम मुहम्मद साहिब द्वारा तथा ईसाईयत क्राईस्ट द्वारा उनके विचारों के आधार पर आरम्भ किया गया था। हर अनुयायी को उन पर विश्वास लाना आवश्यक है। सो, ये दोनों धर्म नहीं मत हैं। यह दोनों वैज्ञानिक भी नहीं हैं।

प्र06 धर्म और विज्ञान का क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर इन दोनों का अपास में अभिन्न सम्बन्ध है। जहाँ धर्म है, वहाँ विज्ञान है। सृष्टि के प्राकृतिक नियमों को विज्ञान कहते हैं। इन नियमों के अनुरूप ही जो कार्य मानव करता है, उसे धर्म कहते हैं। सो दोनों का गहरा सम्बन्ध है। जो मत विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते हैं, वे धर्म नहीं हैं।

प्र07 धर्म कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर धर्म कई प्रकार के होते हैं। वैयक्तिक धर्म, 2. पारिवारिक धर्म, 3. सामाजिक धर्म, 4. राष्ट्रीय धर्म।
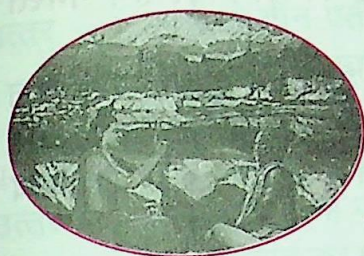
शंका–समाधान

प्र01 सुख, शान्ति और आनन्द में क्या अन्तर है ?

उत्तर सुख इन्द्रियों को प्राप्त होता है, जैसे स्वादिष्ट खानों से। यह सांसारिक पदार्थों से मिलता है।

शान्ति मन को मिलती है। जैसे खाना खिलाने से या किसी दुखी की सहायता करने से।

आनन्द आत्मा को प्राप्त होता है। यह परमात्मा की भक्ति से ही प्राप्त होता है।

प्र02 क्या भगवान् और परमेश्वर में कोई अन्तर है ?

उत्तर हाँ, भगवान् तो एक प्रकार की उपाधि है, जो हम किसी महान् व्यक्ति को देते हैं। जैसे भगवान् राम, भगवान् श्रीकृष्ण आदि। ये सब मनुष्य ही थे। इसके विपरीत परमेश्वर को "ओ3म्" भी कहते हैं, जो सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् है।

प्र03 स्वर्ग और नरक क्या है और कहाँ हैं ?

उत्तर मत–मतान्तरों में इनकी परिभाषा भिन्न–भिन्न है। कोई इसे तीसरे आसमान पर, कोई पांचवें और कोई सातवें आसमान पर कहता है। कोई इसे वैकुण्ठ में बताता है। पर ऐसा कुछ भी नहीं है। वैदिक धर्म के अनुसार स्वर्ग और नरक इसी संसार में, इसी जीवन में हैं। जहाँ सुख हैं, वहाँ स्वर्ग है। जहाँ दुख है, वहाँ नरक है। जिन घरों में लड़ाई–झगड़े हैं, वहाँ नरक है। परन्तु जिस घर में प्यार, ईश्वर–पूजा, सहयोग है, धनधान्य है

प्र04 **'नमस्ते' के क्या अर्थ है ?मिलने पर हम नमस्ते ही क्यों करते हैं ?**

उत्तर 'नमस्ते' का अर्थ है – 'मैं आप का यथायोग्य सम्मान करता हूँ।'' इसके अनुसार बड़ों के प्रति छोटे आदर–सम्मान प्रकट करते हैं और बड़े उन्हें आशीर्वाद और शुभ कामनाएं देते हैं।

प्र05 **श्राद्ध क्या होता है ?**

उत्तर आजकल अपने मृतक पूर्वजों के नाम पर श्राद्ध–तर्पण की परिपाटी चल रही है, जिसमें ब्राह्मणों को खाना खिलाकर यह समझा जाता है कि हमारे पितर इससे तृप्त हो जायेंगे। पर यह कैसे हो सकता है ?क्योंकि उनके शरीर तो भस्म हो चुके हैं और आत्मा अमर है। आत्मा को इस खान–पान की कोई आवश्यकता नहीं। वैदिक शास्त्रों कं अनुसार तर्पण व श्राद्ध जीवित माता–पिता और सम्बन्धियों का होना चाहिए, जो कि उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा से ही हो सकता है। यही सच्चा श्राद्ध है। हाँ! हम पूर्वजों की याद में उस दिन यज्ञ, दान आदि करें और उनके अच्छे गुणों और कर्मों को स्मरण करें, एवं अनुसरण करें तो यह बहुत अच्छा है। इससे उन्हें तो कुछ प्राप्ति नहीं होगी, अपितु हम शुभ कार्य करके लाभ उठायेंगे।

प्र06 **गंगा आदि नदियों में नहाने से क्या पाप धुल जाते हैं ?**

उत्तर नहीं, ऐसा नहीं है। गंगा–यमुना नदियां हमारे देश की संस्कृति की प्रतीक हैं। इनके किनारे अनेक ऋषि–मुनियों के आश्रम हैं। उनकी घोर तपस्या के कारण वे स्थान हमारे लिए तीर्थ–स्थान बन गये हैं। इसके अतिरिक्त गंगा नदी के निर्मल जल में कुछ ऐसे रसायन और जड़ी–बूटियों के रस मिल जाते हैं, जिनसे इसका शुद्ध जल बहुत देर तक पड़ा रहने पर भी खराब नहीं होता। परन्तु किसी भी नदी में नहाने से शरीर तो धुल सकता है, परन्तु पाप नहीं।

प्र07 **आर्यों के तीन प्रतीक कौन से हैं ?**

उत्तर आर्यों के तीन प्रतीक – ओ३म् – आर्य – तथा नमस्ते हैं। ये किसी सम्प्रदाय अथवा जाति विशेष के न होकर समस्त संसार के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

प्र08 **ओ३म् किसका प्रतीक है ?**

उत्तर ओ३म् परमात्मा का परमोत्तम एवं प्रमुख नाम है। तथा एकेश्वरवाद का प्रतीक है।

प्र09 **आर्य शब्द किसका प्रतीक है ?**

उत्तर आर्य शब्द से श्रेष्ठता के भाव की ध्वनि निकलती है तथा यह गौरवपूर्ण एक जातीय नाम है।

प्र010 **नमस्ते किसका प्रतीक है ?**

उत्तर नमस्ते एक सार्थक अभिवादन का प्रतीक है। अन्य अभिवादन अपने आप में वह भाव नहीं रखते जो नमस्ते में है अर्थात् नमः + ते = नमस्ते। आपके लिए नमन हो।

प्र011 **पृथ्वी आदि लोक घूमते हैं वा स्थिर हैं ?**

उत्तर घूमते हैं, वेद में लिखा है कि यह भूगोल जल के सहित सूर्य के चारों ओर घूमता जाता है, इसलिए भूमि घूमती है। यजु0 3/6

प्र012 **आर्य किसको कहते हैं ?**

उत्तर आर्य नाम धार्मिक, विद्वान् आप्त पुरुषों का और इनसे विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है।

प्र013 **पण्डित किसे कहते हैं ?**

उत्तर जिसको परमात्मा और जीव आत्मा का यथार्थ ज्ञान हो, जो आलस्य व प्रमाद रहित तथा उद्योगी हो, सुख व दुःखों को सहन करने की क्षमता रखता हो, धार्मिक हो, वेदादि शास्त्रों के मर्म को शीघ्र जानने वाला हो, निरभिमानी हो, उपयुक्त व्यवहार करने वाला हो, प्रवृत्तवाक्, प्रतिभावान् तथा सब विद्याओं के ग्रन्थों को

प्र014 मूर्ख किसे कहा जाता है ?

उत्तर अनपढ़, घमण्डी, अकर्मण्य, दरिद्री, तथा बिना बुलाए जहाँतहाँ जाने वाला, अप्रिय आचरण वाला, अण्ड–बण्ड बकने वाला, बनते कार्यों को बिगाड़ने वाला ऐसा पुरुष मूढ़ बुद्धि या मूर्ख कहलाने के योग्य है।

प्र015 विद्यार्थियों में कौन–कौन से दोष नहीं होने चाहिए ?

उत्तर जो आलसी, अभिमानी, नशेडी, मूढ, चपल, बकवादी, जड़बुद्धि, लालची हो वह विद्यार्थी विद्याग्रहण नहीं कर सकता।

प्र016 विद्यार्थी के गुण क्या है ?

उत्तर कौए जैसी चेष्टा, बगुले जैसा ध्यान, श्वान के समान नींद, अल्पाहारी, गृहत्यागी ये विद्यार्थी के लक्षण हैं।

प्र017 विद्या और अविद्या किसको कहते हैं ?

उत्तर जिससे पदार्थ यथावत् जानकर न्याययुक्त कर्म किए जावें वह विद्या और जिससे किसी पदार्थ का यथावत् ज्ञान न होकर अन्याय रूप कर्म किये जायें वह अविद्या है।

प्र018 न्याय और अन्य किसको कहते हैं ?

उत्तर जो पक्षपात रहित सत्याचरण करना है वह न्याय और जो पक्षपात से विथ्याचरण करना है वह अन्याय कहाता है।

प्र019 आचार्य किसे कहते हैं ?

उत्तर जो सांगोपांग वेद विद्याओं का अध्यापन, सत्याचार का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग कराने वाला हो, वह आचार्य कहलाता है।

प्र020 शिष्य के क्या लक्षण है ?

उत्तर शिष्य उसको कहते हैं, जो सत्य शिक्षा और विद्या को ग्रहण करने योग्य, धर्मात्मा विद्या ग्रहण की इच्छा और आचार्य का प्रिय रहने वाला है।

प्र021 पुरोहित किसे कहते हैं ?

उत्तर जो यजमान का हितकारी हो और सत्योपदेष्टा हो।

प्र022 माता–पिता व आचार्य अपनी सन्तानों को कैसी शिक्षा करें ?

उत्तर माता–पिता व आचार्य अपनी सन्तानों व शिष्यों को अच्छी शिक्षा दें। जैसे अच्छी भाषा बोलने, खाने–पीने, उठने–बैठने, वस्त्र धारण करने, बड़ों का मान करने, आदि की अच्छी शिक्षा दें।

❑❑❑

संस्कार व पर्व

प्र01 संस्कार कितने हैं ?उनके नाम बताओ।

उत्तर संस्कार 16 होते हैं – 1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोनयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध, 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. समावर्तन, 13. विवाह, 14. वानप्रस्थ, 15. संन्यास, 16. अन्त्येष्टि।

प्र02 जन्म से पूर्व कौन से संस्कार किए जाते हैं ?

उत्तर जन्म से पूर्व – गर्भाधान, पुंसवन, व सीमन्तोनयन किए जाते हैं।

प्र03 बाल्यकाल में कौन–कौन से संस्कार किये जाते हैं ?

उत्तर बालक के जन्म लेने के पश्चात् जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुण्डन, व कर्णवेध संस्कार किए जाते हैं।

प्र04 विद्यारम्भ करने के समय कौन से संस्कार आवश्यक हैं ?

उत्तर विद्यारम्भ करने के समय उपनयन एवं वेदारम्भ दो संस्कार बताये गये हैं।

प्र05 विद्या समाप्त करने पर कौन से संस्कार किए जाते हैं ?

उत्तर विद्या समाप्ति पर समावर्त्तन (दीक्षान्त), एवं विवाह संस्कार किये जाते हैं।

प्र06 **मनुष्य की पिछली अवस्था में कौन से संस्कार किये जाते हैं ?**

उत्तर मनुष्य की पिछली अवस्था में वानप्रस्थ, संन्यास एवं अन्त्येष्टि संस्कार किये जाते हैं।

प्र07 **ये संस्कार किस उद्देश्य के लिए किये जाते हैं ?**

उत्तर ये संस्कार मनुष्य को गर्भ समय से मृत्युपर्यन्त तक अच्छे विचार डालते हैं। मनुष्य के जीवन को उन्नतिशील बनाने के लिए मन और आत्मा को सुसंस्कृत व बलिष्ठ बनाने के लिए तथा मनुष्य को जीवन संग्राम में योग्य या समर्थ बनाने के लिए ये संस्कार किए जाते हैं।

प्र08 **पर्व किसे कहते हैं तथा मुख्य पर्व कौन से हैं ?**

उत्तर पर्व शब्द पर्व पूरणे धातु से बनता है, जिसका अर्थ पूरयति जनान् आनन्देन अर्थात् लोगों को आनन्द से भरपूर कर देने वाला है। इन आर्य पर्वों में नवसंवत्सरोत्सव या संवत्सरेष्टि, रामनवमी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, विजयादशमी (दशहरा), ऋषि दयानन्द बोधोत्सव, (शिवरात्रि), ऋषि निर्वाणोत्सव (दीपावली), पं0 लेखराम तृतीया, वसन्त पंचमी, सीताष्टमी, श्रावणी उपाकर्म, मकर संक्रान्ति व माघी विशेष उल्लेखनीय हैं।

यम–नियम

प्र01 **यम–नियम क्या हैं ?**

उत्तर महर्षि पतंजलि के योग शास्त्र में इन यम–नियमों का वर्णन आता है, वस्तुतः ये व्यक्ति, समाज व राष्ट्र तथा विश्व की शारीरिक, आत्मिक और मानसिक उन्नति के साधन है। यदि इन्हें मनुष्य मात्र की आचार–संहिता कहा जाये तो कोई अत्युक्ति न होगी।

प्र02 **यम कितने हैं ?**

उत्तर यम पांच हैं – 1. अहिंसा, 2. सत्य, 3. अस्तेय, 4. ब्रह्मचर्य, और 5. अपरिग्रह।

प्र03 **नियम कितने व कौन से हैं ?**

उत्तर नियम भी पांच हैं – 1. शौच, 2. सन्तोष, 3. तप, 4. स्वाध्याय, 5. ईश्वर प्राणिधान।

प्र04 **जप किसे कहते हैं, उससे क्या लाभ हैं ?**

उत्तर प्राणायाम पूर्वक ईश्वर के निज नाम ओम्, भूः, भुवः, स्वः आदि महाव्याहृतियों अथवा गायत्री आदि मन्त्रों का जिह्वा से उच्चारण किए बिना केवल मन के द्वारा अभ्यास करने को जप कहते हैं। कोई–कोई बोलकर भी जप करते हैं। जप से बुद्धि अति सूक्ष्म होती है तथा मन में कलुषित भावों का आगमन नहीं होता।

प्र05 **अभक्ष्य पदार्थ कौन से हैं ?**

उत्तर अण्डा, मांस, शराब, तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी, गुटके, आदि अभक्ष्य पदार्थ हैं। अधिक खट्टा, तीखा, चर्परा, कडवा पदार्थ भी अभक्ष्य है।

प्र06 **भागवत् पुराण आदि ग्रन्थ क्या ब्राह्मण ग्रन्थों के भाग हैं ?**

उत्तर ये ब्राह्मण ग्रन्थों के भाग नहीं हैं। इनमें सत्य थोड़ा और मिथ्या अधिक है। ये सम्प्रदाय विशेष को लेकर रचे गये हैं।

प्र07 **ज्ञान प्राप्ति के साधन कौन से बताये गये हैं ?**

उत्तर ज्ञान प्राप्ति के साधन निम्न हैं –

1. उत्तम आचारवान् शिक्षकों से श्रद्धा और ब्रह्मचर्यपूर्वक वेद आदि सत्य शास्त्रों का पढ़ना–पढ़ाना।
2. धर्मात्मा व आप्त पुरुषों का संग और उनके उपेदशों को सुनना–सुनाना।
3. स्वयं सत्य ग्रन्थों का स्वाध्याय करना और तद्नुसार विद्या को बढ़ाना।
4. जो कुछ स्वाध्याय आदि से ज्ञानोपलब्धि हो उसकी वैज्ञानिक दृष्टि से भौतिक जगत् के साथ संगति मिलाकर जांचना।

प्र08 **पाँच भूत कौन से हैं ?**

उत्तर आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन्हें पंचमहाभूत कहा जाता है। स्थूल भूतों से लोक–लोकान्तरों का निर्माण होता है। मनुष्य का शरीर भी पंचभूतों का पिण्ड है।

प्र09 **सृष्टि की आयु के विषय में बताओ।**

उत्तर सृष्टि की आयु 4 अरब 32 करोड़ वर्ष और उतना ही समय प्रलय काल का होता है।

प्र010 **प्रमाण क्या है और कितने हैं।**

उत्तर जिनसे किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त हो सके, ये प्रमाण हैं, जो निम्न प्रकार के हैं –

1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान, 3. उपमान, 4. शब्द, 5. ऐतिह्य, 6. अर्थापत्ति, 7. सम्भव और 8. अभाव।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्र01 स्वामी दयानन्द सरस्वती कौन थे ?

उत्तर स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्यसमाज के संस्थापक, दलितोद्धारक, वेदोद्धारक, समाज–सुधारक और युग–प्रवर्तक थे।

प्र02 स्वामी दयानन्द जी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

उत्तर स्वामी दयानन्द जी का जन्म सन् 1824 ई0 में गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में हुआ था।

प्र03 स्वामी दयानन्द का बचपन का नाम तथा उनके माता–पिता का नाम क्या था ?

उत्तर स्वामी दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर तथा उनके पिता का नाम श्री कर्षन जी तिवारी था। उनकी माताजी का नाम अमृतबाई था। कर्षन जी बड़े जमीदार व मौरवी राज्य के अधिकारी थे।

प्र04 स्वामी दयानन्द के जीवन में घटी शिवरात्रि की घटना क्या है ?

उत्तर उन्होंने पिता जी के कहने पर शिवरात्रि का व्रत रखा था। पिताजी ने उन्हें कहा था कि शिवरात्रि का व्रत रखने से तथा रात्रि में जागरण करने से शिव प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं। उस समय उनकी आयु मात्र 14 वर्ष थी। इस बात का मूलशंकर पर बहुत प्रभाव पड़ा और उन्होंने दिनभर कुछ भी नहीं खाया–पिया और रात्रि में शिवमंदिर जाकर शिवलिंग की पूजा–अर्चना करके जागरण करने लगे। बाकी भक्त तो सो गए,

किन्तु मूलशंकर जागता रहा। अचानक मध्य रात्रि में चूहे आए तथा शिवमूर्ति पर चढाए हुए प्रसाद को खाने लगे। मूलशंकर के मन में प्रश्न उत्पन्न हुआ कि "यह कैसा शिव है जो अपनी भी रक्षा नहीं कर पा रहा है ? यह हमारी क्या रक्षा करेगा ?वे समझ गये कि यह सच्चा शिव नहीं है। इस घटना से उनकी मूर्ति पूजा से श्रद्धा समाप्त हो गई। वे सदैव सच्चे शिव के दर्शन के विषय में सोचने लगे।

प्र05 स्वामी जी के मन पर गहरा प्रभाव डालने वाली घटनायें कौन–सी घटी ?

उत्तर बहन तथा चाचा की मृत्यु की घटना ने उनके मन पर बहुत गहरा प्रभाव डाला। चाचा उनसे बहुत प्यार करते थे। चाचा की मृत्यु से उनके मन में अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए, जैसे – मृत्यु क्या है ?क्या मृत्यु पर विजय नहीं पाई जा सकती ?इस घटना से उन्हें संसार से वैराग्य हो गया।

प्र06 चाचा की मृत्यु के पश्चात् मूलशंकर ने क्या निश्चय किया ?

उत्तर चाचा की मृत्यु के पश्चात् मूलशंकर ने सच्चे शिव के दर्शन के लिए और मृत्यु पर विजय पाने के लिए गृह–त्याग कर दिया।

प्र07 घर छोड़ने के बाद मूलशंकर का नाम क्या रखा गया ?

उत्तर घर छोड़ने के पश्चात् मूलशंकर शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी कहलाने लगे।

प्र08 शुद्ध चैतन्य को संन्यास की दीक्षा किसने दी ?

उत्तर शुद्ध चैतन्य को संन्यास की दीक्षा देने वाले स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती थे। संन्यासी बनने के बाद उनका नाम स्वामी दयानन्द रखा गया।

प्र09 स्वामी दयानन्द के विद्या गुरु कौन थे?और उनकी पाठशाला कहाँ थी ?

उत्तर स्वामी दयानन्द की गुरु का नाम स्वामी विरजानन्द दण्डी था। उनकी संस्कृत–पाठशाला मथुरा में थी। उन्हीं से स्वामी जी ने वेद–वेदांगों की विशेष रूप से शिक्षा ली।

प्र010 स्वामी दयानन्द गुरु विरजानन्द को दक्षिणा में देने को क्या लाये ?

उत्तर मुट्ठी भर लौंग परन्तु स्वामी विरजानन्द ने दक्षिणा में जीवनभर वेद प्रचार का वचन लिया। वेद–विरुद्ध सब बातों का और रीति–रिवाजों को लोगों से छुड़वाने को कहा।

प्र011 स्वामी दयानन्द जी ने गुरु–दक्षिणा के वचन को कैसे निभाया ?

उत्तर स्वामी जी ने स्थान–स्थान पर जाकर बड़े–बड़े पण्डितों, मौलवियों और पादरियों से शास्त्रार्थ किए। कुम्भ आदि के मेलों में वैदिक धर्म पर बड़े प्रभाविक व्याख्यान देकर वेदों का प्रचार किया। मूर्तिपूजा, जन्म–मूलक, जात–पात, अस्पृश्यता व अछूतपन, बाल विवाह, मृतक श्राद्ध, तीर्थयात्रा आदि पर व्याख्यान देकर समाज में एक क्रान्ति पैदा की। स्वार्थी एवं धूर्त लोगों ने उन पर पत्थर बरसाए और कितनी ही बार विष भी दिया, परन्तु वे अपने उद्देश्य से पीछे नहीं हटे। इस प्रकार उन्होंने अपने जीवन का पूर्णतः बलिदान करके गुरु–दक्षिणा के व्रत को निभाया।

प्र012 स्वामी दयानन्द की मृत्यु कैसे हुई ?

उत्तर जोधपुर में स्वामी जी के रसोईये जगन्नाथ ने नन्हीं बाई वेश्या के बहकावें में आकर दूध में जहर तथा काँच मिलाकर उन्हें पिला दिया जिससे स्वामी जी की दीपावली के दिन अजमेर में 30 अक्तूबर सन् 1883 ई0 को मृत्यु हो गई।

प्र013 स्वामी दयानन्द जी ने कौन–कौन से ग्रंथ लिखे ?

उत्तर स्वामी दयानन्द ने लगभग 36 ग्रन्थों की रचना की। उनमें से कुछ हैं – सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु गोकरूणानिधि आदि। सत्यार्थप्रकाश स्वामी जी के सिद्धान्तों की अनमोल रचना है।

प्र014 स्वामी जी का सब से प्रमुख ग्रन्थ कौन सा है ?

उत्तर स्वामी जी का सबसे प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश है, जिसमें वेदों के आधार पर स्वामी जी ने भिन्न–भिन्न विषयों की चर्चा की है। इस ग्रन्थ के चौदह समुल्लास (अध्याय) हैं। यह एक ऐसा अनमोल ग्रन्थ है, जिसमें न केवल धार्मिक अपितु मानव और समाज की सब प्रकार की व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है।

प्र015 संस्कृत भाषा व आर्यभाषा (हिन्दी) के प्रचार के लिए ऋषि ने क्या किया ?

उत्तर स्वामी जी ने संस्कृत भाषा के प्रचार के लिए कई स्थानों पर संस्कृत पाठशालायें खुलवाई। विधवाश्रम व अनाथालय खुलवाये। अपने ग्रन्थों का संस्कृत और हिन्दी में प्रणयन किया। संस्कृत में भाषण देने के स्थान पर हिन्दी भाषा में भाषण दिए, शास्त्रार्थ किए जिससे लोग उनके विचारों की ओर आकृष्ट होने लगे।

प्र016 मृत्यु समय में ऋषि दयानन्द के क्या भाव थे ?

उत्तर अन्त समय तक भी ऋषि दयानन्द वेद मन्त्रों द्वारा ईश्वर का ध्यान व प्रार्थना करते रहे। उनके वचन थे – "हे ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की।"

प्र017 क्या ऋषि दयानन्द स्वराज्य के प्रथम उदघोषक थे ?

उत्तर स्वामी जी स्वराज्य प्राप्ति को भारतीयों का मूल अधिकार समझते थे। वे विदेशी शासन की अपेक्षा

स्वदेशी शासन को बेहतर समझते थे। इसीलिए सत्यार्थप्रकाश में उन्होंने लिखा है कि – "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि, उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता–मात के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।" सत्यार्थप्रकाश समु0 8

प्र018 पाखण्ड–खण्डिनी पताका स्वामी दयानन्द ने कहाँ फहराई थी ?

उत्तर 1867 ई0 में हरिद्वार में कुम्भ मेले के अवसर पर फहराई थी।

प्र019 स्वामी दयानन्द जब स्वामी विरजानन्द की कुटिया पर गये तो उन्होंने क्या कहा ?

उत्तर स्वामी विरजानन्द ने पूछा कि तुम कौन हो ?स्वामी जी ने कहा कि यही तो मैं जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ ?

प्र020 स्वामी दयानन्द की दया का कोई उदाहरण दीजिए।

उत्तर रसोइये जगन्नाथ को जिसने जहर दिया था, उसे ही बचाने के लिए पैसे देकर देश से बाहर नेपाल भेज दिया।

प्र021 जीवरक्षार्थ ऋषि ने क्या कार्य किया ?

उत्तर ऋषि ने जीव रक्षा और मांस–निषेध प्रचार के लिए गोरूणानिधि पुस्तक लिखी तथा महारानी विक्टोरिया के नाम लाखों हस्ताक्षरों सहित आवेदन पत्र द्वारा गोवध बन्द कराने की मांग की।

प्र022 स्वामी दयानन्द जी के प्रभाव से किन व्यक्तियों के जीवन पलट (सुधर) गए ?

उत्तर स्वामी जी के अप्रतिम प्रभाव से अमीचन्द जी, पं० लेखराम जी, श्रद्धानन्द जी व पं० गुरुदत्त जी के जीवन पलट गए।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

प्र01 स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

उत्तर स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म फाल्गुन बदि 13 सम्वत् 1913 विक्रमी तदनुसार 22 फरवरी 1857 के दिन तलवन (जालन्धर, पंजाब) में प्रसिद्ध सम्पन्न एक खत्री परिवार में हुआ था।

प्र02 उनके माता–पिता आदि के विषय में बताओ।

उत्तर स्वामी जी की माता के नाम के विषय में ज्ञात नहीं होता। किन्तु उनके पिता का नाम श्री लाला नानक चन्द्र था। उनके दादा का नाम श्री गुलाबराय व परदादा का नाम श्री सुखानन्द जी था।

प्र03 स्वामी जी का बचपन का नाम क्या था ?

उत्तर स्वामी जी का बचपन का नाम वृहस्पति था, किन्तु पिता ने उनका नाम मुन्शीराम रखा, जो संन्यास लेने से पूर्व तक प्रचलित रहा। 9 वर्ष की अवस्था में उन्होंने बनारस में विद्यारम्भ किया।

प्र04 युवावस्था में उनका जीवन कैसा रहा ?

उत्तर युवावस्था में उनका जीवन बड़े ठाट–बाट का रहा तथा सन् 1875 में उनके मन में धर्म विरोधी भावों का भी उदय हुआ।

प्र05 अपने जीवन पर उन्होंने कौन–सी पुस्तक लिखी ?

उत्तर अपने जीवन का समस्त सत्य वर्णन उन्होंने 'कल्याण मार्ग का पथिक' नामक पुस्तक के रूप में लिखा।

प्र06 **स्वामी श्रद्धानन्द (मुन्शीराम) को स्वामी दयानन्द सरस्वती का सत्संग कब प्राप्त हुआ ?**

उत्तर मुन्शीराम जी को ऋषि दयानन्द का सत्संग बांस बरेली में सन् 1879 में प्राप्त हुआ। दयानन्द सरस्वती ने उनके ईश्वर की सत्ता के सम्बन्ध में नास्तिक विचारों के उत्तर देकर, उन्हें श्रद्धावान् बनने की प्रेरणा दी।

प्र07 **महात्मा मुन्शीराम जी ने आर्य समाज में कब प्रवेश किया ?**

उत्तर महात्मा मुंशीराम ने 1885 में आर्य समाज में प्रवेश किया।

प्र08 **महात्मा मुंशीराम के जीवन में शिवदेवी का क्या योगदान था ?**

उत्तर मुंशीराम जी के जीवन में परिवर्तन का अधिकतर श्रेय उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी को जाता है। उनकी सरलता, सौम्यता व सेवाभावना ने मुंशीराम के जीवन में परिवर्तन कर डाला।

प्र09 **महात्मा मुंशीराम जी के जीवन में पं0 गुरुदत्त जी का क्या महत्व है ?**

उत्तर मुंशीराम जी के जीवन में पं0 गुरुदत्त जी सचमुच एक प्रेरणा स्रोत बनकर आये। वे उनके आत्मिक ज्ञान के चक्षु थे। पं0 गुरुदत्त और लाला साईदास की प्रेरणा से ही मुंशीराम आर्य समाज की ओर खींचे चले आये।

प्र010 **महात्मा मुंशीराम जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान कब बने ?**

उत्तर सन् 1892 ई0 में वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित हुए।

प्र011 **स्वामी जी के जीवन का सबसे प्रसिद्ध व महान् कार्य क्या है ?**

उत्तर स्वामी जी के जीवन का सबसे प्रसिद्ध व महान् कार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना करना था।

प्र012 **स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल क्यों खोला ?**

उत्तर स्वामी जी उस समय की शिक्षा पद्धति से जो कि मैकाले की शिक्षा पद्धति थी उससे सन्तुष्ट न थे, डी.ए.वी. कॉलेज भी उस पद्धति के पोषक बन रहे थे। अतः मुंशीराम जी के मन में सत्यार्थ प्रकाश और यजुर्वेद के मन्त्र 'उपह्वरे' गिरीणाम् को पढ़ते हुए गुरुकुल शिक्षा का पुररुद्धार करने का विचार उद्भूत हुआ।

प्र013 **स्वामी जी ने गुरुकुल कहाँ और कब संस्थापित किया ?**

उत्तर स्वामी जी ने गुरुकुल चण्डीपर्वत माला की उपत्यका व बीहड जंगल में तथा कांगड़ी ग्राम के दक्षिण एवं गंगा की पावन धारा के तट पर 2 मार्च 1902 में खोला। इससे पूर्व यह गुरुकुल एक वैदिक पाठशाला के रूप में 1900 में गुजरांवाला में खोला गया था।

प्र014 **स्वामी श्रद्धानन्द जी को गुरुकुल स्थापित करने के लिए किसने भूमि प्रदान की ?**

उत्तर गुरुकुल कांगड़ी के लिए नजीबाबाद (बिजनौर) के रईस जमींदार मुन्शी अमनसिंह जी ने 1300 बीघे भूमि दान दी थी। जिसकी रजिस्ट्री उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभी पंजाब के नाम की थी।

प्र015 **स्वामी जी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को क्या उपदेश देते थे ?**

उत्तर स्वामी जी अपने शिष्यों को निर्भीक, साहसी, विद्वान् व बलवान् बनने का उपदेश दिया करते थे।

प्र016 **स्वामी जी (महात्मा मुंशीराम) ने संन्यास कब लिया ?**

उत्तर स्वामी जी (महात्मा मुंशीराम) की संन्यास की दीक्षा 12 अप्रैल 1917 को विधिवत् स्वामी सत्यानन्द जी से ली तथा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती नाम से प्रसिद्ध हुए।

प्र017 स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अन्य अनेक कार्य कौन से किये ?

उत्तर स्वामी जी का जीवन कथनी और करनी के अनुरूप था। वे प्रारम्भ में 1888 में कांग्रेस से सम्बन्धित रहे। पश्चात् 1919 में अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष बने। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों की एकता के लिए बहुत कार्य किया। असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। शुद्धि सभा की स्थापना की, अछूतोद्धार का बिगुल बजाया। आर्यभाषा (हिन्दी) को सम्मान दिलाया। दयानन्द जन्म शताब्दी 1925 में उसका नेतृत्व किया। गढ़वाल में पड़े दुर्भिक्ष 1918 में सहयोग किया। 1909 में सार्वदेशिक के प्रधान भी बनें। हिन्दू महासभा की स्थापना की। मलकाने राजपूतों को फिर से शुद्धकर हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। राजनीति में सक्रिय भाग लेते हुए भी उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर एक अद्‌भुत कार्य किया।

प्र018 स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान क्यों हुआ ?

उत्तर आर्य समाज प्रारम्भ से ही एक बलिदानी संस्था रही है। स्वामी श्रद्धानन्द भी एक अमर बलिदानी के रूपमें याद किए जाते हैं। एक मुस्लिम युवती असगरी बेगम अपने दो बच्चों के साथ आर्य समाज देहली में आई और शुद्ध होने की इच्छा प्रकट की। उसकी इच्छानुसार उसे शुद्ध करके उसका नाम शान्तिदेवी रखा गया। मुसलमानों को स्वामी जी का यह कार्य नागवार जान पड़ा। असन्तोष की आग भड़क उठी और मुसलमानों की ओर से स्वामी जी को मारने की धमकियां आने लगी। आखिर 23 दिसम्बर 1926 के दिन एक मदान्ध मुस्लिम ने उन पर गोलियां दाग दी। स्वामी का बलिदान हो गया। वे अमर हो गये।

प्र019 स्वामी जी को मारने वाले हत्यारे अब्दुल रशीद को किसने पकड़ा ?

उत्तर स्वामी जी को मारने वाले अब्दुल रशीद को पहले तो सेवक धर्म सिंह ने पकड़ना चाहा, परन्तु उसने धर्मसिंह को घायल कर दिया। किन्तु दूसरे ही क्षण शरीर से बलिष्ठ पं0 धर्मपाल जी विद्यालंकार ने उसे धर–दबोचा और जब तक पुलिस नहीं आई तब तक उसे कब्जे में रखा। गुरुकुल के रजत जयन्ती उत्सव पर सेवक धर्मसिंह और पं0 धर्मपाल विद्यालंकार को इस निर्भीक कार्य के लिए स्वर्ण पदक से अलंकृत कर उनको अभिनन्दित किया गया था।

प्र020 स्वामी जी की निर्भीकता का कोई उदाहरण दीजिए।

उत्तर अपने समग्र जीवन में स्वामी जी निर्भीक व साहसी रहे। गुरुकुल को बीहड़ जंगल में खोलने का निर्णय भी निर्भीकता व साहसिकता का ही प्रतीक था। किन्तु रॉलेट एक्ट के विरोध में जब स्वामी जी (30–03–1919) में एक बड़े जुलूस के साथ घंटाघर (चांदनीचौक) के पास पहुंचे तो फौजियों ने उस जुलूस को आगे बढ़ने से रोक दिया। एक गुरखा जवान ने जुलूस पर गोली चलाने की धमकी देकर राइफल उठाई। इस पर स्वामी जी आगे बढ़े और उस जवान को ललकार कर कहा – "मुझ पर गोली चलाओ।" इससे बड़ा निर्भीकता का उदाहरण और क्या हो सकता है।

प्र021 स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली के बेताज के बादशाह थे। सिद्ध कीजिए।

उत्तर वह समय स्वतन्त्रता के लिए तड़प रही भारतीय हिन्दू और मुसलमान दोनों ही वर्गों का एक जुटता का युग था। दिल्ली पर वायसराय का शासन न होकर उन दिनों स्वामी जी के संकेत मात्र से दिल्ली हरकत में आती थी। ऐसे आर्य संन्यासी को उन दिनों मुसलमानों

ने 4 अप्रैल 1919 के दिन बड़े भाई कहकर, नेता मानकर सबसे बड़ा और विख्यात मस्जिद जामा मस्जिद, दिल्ली के मिम्बर पर बिठाकर उनका अभूतपूर्व सम्मान किया। संसार के इतिहास में यह पहला अवसर था, जबकि एक गैर–मुस्लिम को मस्जिद की वेदी से उपदेश देने की अनुमति दी गई थी। उन्होंने उस वेदी से – "त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अथा ते सुम्नीमहे।। ऋ08/97/11 वेद मन्त्र के द्वारा ईश्वर को माता और पिता के रूप में वर्णित किया था और ओ३म् शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः के साथ अपना उपदेश समाप्त किया।

प्र022 स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति में गुरुकुल कांगड़ी क्या कार्य कर रहा है ?

उत्तर स्वामी श्रद्धानन्द जी का सबसे बड़ा स्मारक या स्मृति तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ही है। फिर भी उनकी स्मृति तो गुरुकुलवासियों के हृदयों में सदा बनी रहती है। यथा–

1. गुरुकुल कांगड़ी में प्रतिवर्ष अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द हॉकी टूर्नामेन्ट का अयोजन 23 से 31 दिसम्बर तक उनके 'बलिदान सप्ताह' के रूप में मनाया जाता है।
2. गुरुकुल विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्राहलय में स्वामी श्रद्धानन्द जी के वस्त्रों, उपकरणों, चित्रों व कार्यों से सम्बन्धित एक अलग विथिका दर्शनीय है।
3. विश्वविद्यालय में श्रद्धानन्द वैदिक अनुसंधान विभाग के साथ ही श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र भी महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।
4. गुरुकुल के कभी "सिंहद्वार" रहे स्थान पर स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा उनका सदा स्मरण कराती है।
5. गुरुकुल फार्मेसी द्वारा संचालित श्रद्धानन्द हॉस्पिटल रोगियों की सेवा में तत्पर है।

लाला लाजपतराय

प्र01 लाला लाजपतराय का बाल्य–जीवन कैसा रहा ?

उत्तर लाला लाजपतराय का जन्म सन् 1865 में जिला लुधियाना, पंजाब में हुआ था। उनके पिता लाला राधाकृष्ण जी उर्दू व फारसी के अच्छे जानकार तथा अध्यापक थे। जब वे मिडिल के विद्यार्थी थे, तभी उनका विवाह कर दिया गया था। उनकी पत्नी का नाम राधादेवी था। लाहौर में पढ़ाई के समय जब उन्होंने स्वामी दयानन्द जी का भाषण सुना तो वे आर्यसमाज के सदस्य बन गए।

प्र02 लालाजी का आर्यसमाज से क्या सम्बन्ध रहा ?

उत्तर लालाजी आर्यसमाज को अपनी माता और स्वामी दयानन्द जी को पिता कहा करते थे। वे आर्यसमाज के एक प्रसिद्ध नेता थे। डी॰ ए॰ वी॰ कॉलेज लाहौर की स्थापना में उनका अमूल्य योगदान रहा है।

प्र03 उन्होंने समाजसेवा के लिए क्या किया ?

उत्तर उन्होंने समाजसेवा के लिए एक सेवा–समिति बनाई। उन्होंने उत्तर भारत के अकाल और कांगड़ा के भूकम्प में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1907 में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और उड़ीसा के अकाल के समय भी लाला जी कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ तुरन्त सहायता कार्यों में जुट गए थे। इस प्रकार उन्होंने कई रूप से समाजसेवा की। अछूतोद्धार के लिए मुक्ति–सेना का गठन करके उन्होंने दलित भाइयों को

गले लगाया। वस्तुतः आर्यसमाज में रहकर ही लाला जी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा है।

प्र04 लालाजी की राजनीति में क्या भूमिका थी ?

उत्तर लालाजी कांग्रेस के स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ जुड़े हुए थे। वे कांग्रेस के गर्म–दल का नेतृत्व करते थे। इसी कारण अंग्रेज सरकार ने उन्हें बर्मा की माण्डले जेल में कैद कर दिया था। वहाँ से रिहाई के बाद वे गाँधी जी के असहयोग–आन्दोलन में कूद पड़े। परन्तु बाद में कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण नीति के विरोध में वे कांग्रेस छोड़कर हिन्दू–महासभा में सम्मिलित हो गये। जब लालाजी साईमन–कमीशन के विरोध में लाहौर के जूलस का नेतृत्व कर रहे थे तो उनके ऊपर पुलिस ने इतनी लाठियाँ बरसाई कि उनका उस पीड़ा से 17–नवम्बर सन् 1928 में निधन हो गया।

प्र05 मृत्यु के समय लालाजी ने क्या कहा था ?

उत्तर शेरे पंजाब लाला लाजपतराय जी के अन्तिम शब्द थे – "मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी का प्रहार एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील सिद्ध होगा।" और वैसा ही हुआ।

प्र06 लाला जी का व्यक्तित्व कैसा था ?

उत्तर लाला जी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। हज़ारों की भीड़ को प्रभावित करने वाली उनकी वाणी होती थी। वे लेखक, नेता, कार्यकर्ता, समाज सेवक, शिक्षाशास्त्री, गम्भीर चिन्तक तथा विचारक थे। उन्होंने सम्राट अशोक, शिवा जी, स्वामी दयानन्द, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी तथा योगिराज श्री कृष्ण एवं महावीर गोरीबाल्डी मैजिनी के जीवन चरित लिखे। आर्य समाज पर भी उन्होंने "दि आर्य समाज" नामक पुस्तक लिखी।

❑❑❑

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

प्र01 **पं० गुरुदत्त जी का विद्यार्थी जीवन कैसा था ?**

उत्तर पं० गुरुदत्त बचपन से ही बुद्धिमान थे उनका जन्म 26 अपैल 1864 को मुलतान के लाला रामकृष्ण के यहाँ हुआ था अध्ययन में इनकी रूचि बाल्यकाल से ही थी। वे विद्यार्थी जीवन में अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, गणित और विज्ञान–विषयों में अन्य विद्यार्थियों से बहुत आगे थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने अलग से संस्कृत भी पढ़नी शुरु की। लाहौर विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीक्षा पास करके उन्होंने भौतिक विज्ञान में एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की। इस परीक्षा में वे कॉलेज में सर्वप्रथम रहे। इसी कारण उनके नाम के बाद 'विद्यार्थी' शब्द जुड़ गया।

प्र02 **पं० गुरुदत्त जी की नास्तिकता कैसे दूर हुई ?**

उत्तर पं० गुरुदत्त प्रारम्भ में नास्तिक थे। उनका ईश्वर पर पूर्ण विश्वास नहीं था। जब स्वामी दयानन्द जी अजमेर में मृत्यु–शय्या पर थे, उस समय लाहौर आर्यसमाज ने पं० गुरुदत्त जी को उनकी सेवा के लिए भेजा। वहां पर उन्होंने स्वामी जी की मृत्यु का आश्चर्यजनक दृश्य देखा कि सारे शरीर से खून बह रहा था, परन्तु स्वामी जी का चेहरा शान्त और प्रसन्न था और वे अति भयंकर कष्ट को भी शान्ति से सह रहे थे। अन्त में प्राण त्यागते हुए जब स्वामी जी ने कहा कि – "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" तो इस वाक्य को

सुनकर और सारे दृश्य को देखकर पं0 गुरुदत्त जी नास्तिक से आस्तिक बन गये।

प्र03 पं0 गुरुदत्त जी की क्या विशेषताएं थी ?

उत्तर पं0 गुरुदत्त जी संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी और अन्य भाषाओं तथा विज्ञान के बहुत बड़े विद्वान् थे। वे महान् विचारक, लेखक और उच्च कोटि के वैज्ञानिक थे। उन्होंने छोटी–सी आयु में ही अनेक पुस्तकें लिखीं। वे वेद और आधुनिक विज्ञान का समन्वय करके लेख लिखते थे। उनकी विषय विवेचना शक्ति को देखकर बड़े–बड़े विद्वान् दंग रह जाते थे।

प्र04 पं0 गुरुदत्त का आर्यसमाज के लिए क्या योगदान रहा ?

उत्तर स्वामी दयानन्द के बाद उनकी स्मृति में जब शिक्षा–संस्थान खोलने का निश्चय हुआ, तो गुरुदत्त जी ने भारत–भर में घूम–घूम कर उसके लिए धन–संग्रह किया। वे डी.ए.वी. कॉलेज में अवैतनिक रूप से विज्ञान पढ़ाते थे। उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य था – आर्य साहित्य लिखकर आर्यसमाज का प्रचार कार्य करना। उन्होंने वेदों के वैज्ञानिक अर्थों के आधार पर भी लेख लिखे थे। वे आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सवों में जाकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करते थे। इस प्रकार आर्य समाज के कार्यों में उनका विशेष योगदान था। उन्होने 'सत्यार्थ प्रकाश' का अठारह बार अध्ययन किया था।

प्र05 पं0 गुरुदत्त जी की मृत्यु कैसे हुई ?

उत्तर दिन–रात आर्यसमाज का प्रचार कार्य करने से उनका स्वास्थ्य गिरता चला गया। उनका रोग इतना बढ़ गया कि 26 वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने प्राण त्याग दिये।

❑❑❑

धर्मवीर पं० लेखराम

प्र01 पं० लेखराम के बचपन का परिचय दीजिए।

उत्तर पं० लेखराम का जन्म 1915 विक्रमी में महता तारा सिंह नामक ब्राहमण के यहाँ झंग जिले (आजकल पाकिस्तान) में हुआ था। आरम्भ में उन्होंने देहाती मदरसे में ही उर्दू की शिक्षा प्राप्त की। बाद में 11 वर्ष की आयु में वे अपने चाचा जी के पास पेशावर में चले गये जो कि पुलिस की सेवा में थे। यहाँ लेखराम जी ने अगली पढ़ाई अनेक अध्यापकों से प्राप्त की। वे स्वाध्यायशील थे और अनेक धर्मों के ग्रन्थ भी पढ़ते रहते थे। 17 वर्ष की आयु में वे पुलिस में भर्ती हो गए और पांच वर्ष तक पुलिस की नौकरी करते रहे।

प्र02 पं० लेखराम आर्यसमाजी कैसे बनें ?

उत्तर पं० लेखराम स्वाध्यायशील थे। स्वाध्याय करते-करते उन्होंने मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थ पढ़े, जो आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर लिखे गये थे। इन पुस्तकों के पढ़ने से उन की आर्यसमाज में रूचि जाग्रत हुई। फिर उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश आदि ऋषि के ग्रन्थ पढ़ें। आर्यसमाज का प्रभाव गहरा हुआ तो पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना भी कर दी। वे आर्यसमाज का पूर्णकालीन प्रचार भी करने लगे, इसीलिए पुलिस की नौकरी छोड़ दी।

प्र03 महर्षि दयानन्द से उनका कब सम्पर्क हुआ और उसका क्या लाभ हुआ ?

उत्तर पं0 लेखराम स्वामी जी के दर्शनों के लिए अजमेर गये थे। स्वामी जी से मिलकर उन्होंने अपनी अनेक शंकाओं का समाधान किया, जिससे आर्यसमाज के सिद्धान्तों में उनका दृढ़ विश्वास हो गया।

प्र04 पं0 लेखराम ने आर्यसमाज के कार्य को कैसे बढ़ाया ?

उत्तर उन्होंने मौलवियों और पादरियों के साथ शास्त्रार्थ करके आर्यसमाज के वैदिक विचारों का महत्व सिद्ध किया। उन्होंने नई पुस्तके लिखकर भी वैदिक धर्म का प्रचार किया। महर्षि दयानन्द के जीवन–चरित्र की घटनाओं का भी उन्होंने ही सबसे पूर्व संग्रह किया था।

प्र05 पं0 लेखराम जी की मृत्यु कैसे हुई ?

उत्तर पं0 लेखराम जी के शुद्धि–आन्दोलन से मुसलमान व्याकुल हो उठे थे। एक मुसलमान युवक शुद्ध होने के बहाने पंडित जी के पास आया और अवसर देखकर उसने उनके पेट में छुरा भौंक दिया, जिससे 6–मार्च 1897 में उनका बलिदान हो गया।

प्र06 पं॰ लेखराम जी के आर्यों के नाम अन्तिम संदेश क्या था ?

उत्तर पं॰ जी ने आर्यों को अपना अन्तिम संदेश देते हुए कहा कि "आर्यसमाज में तहरीर (लेखन) तथा तक़रीर (व्याख्यान) का काम बंद नहीं होना चाहिए।"

देश के क्रान्तिकारी

1. **महाराणा प्रताप** – जिन्होंने देश और धर्म की रक्षा के लिए अकबर से युद्ध किया।
2. **छत्रपति शिवाजी** – जिन्होंने औरंगजेब से युद्ध किया और दक्षिण भारत में हिन्दू राज्य की स्थापना की।
3. **मंगल पाण्डेय** – एक सैनिक जिन्होंने 1857 की क्रान्ति की चिंगारी फूंकी।
4. **झांसी की रानी** – 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों से लड़ते हुए अपना बलिदान किया।
5. **वीर सावरकर** – स्वतन्त्रता आन्दोलन में कालापानी की सजा हुई जिसमें हाथों और पैरों में बेड़िया डालकर रखा गया तथा कोल्हू के बैल का काम लिया गया।
6. **शहीद भगत सिंह** – लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने तथा असेम्बली हाल में बम फैंकने के जुर्म में फांसी हुई।
7. **शहीद सुखदेव** – ब्रिटिश अफसर को मारने के कारण इन्हें भगत सिंह के साथ फांसी हुई।
8. **शहीद राजगुरु** – लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिए ब्रिटिश अफसर को मारने के जुर्म में भगत सिंह के साथ फांसी हुई।
9. **चन्द्रशेखर आजाद** – ये भगत सिंह के प्रेरणा स्त्रोत थे। पुलिस के साथ लड़ते हुए अंतिम गोली स्वयं को मारकर शहीद हो गये। इन्होंने ही हमें इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा दिया।

10. **शहीद ऊधम सिंह** – जलिया वाला कांड के दोषी जनरल डायर को मारने के जुर्म में फांसी की सजा हुई।
11. **मदनलाल डींगरा** – लार्ड करसन को मारने के जुर्म में फांसी की सजा हुई।
12. **भाई परमानन्द** – गदर पार्टी बनाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन को आगे बढ़ाया।
13. **रामप्रसाद बिस्मिल** – काकोरी कांड में उन्हें फांसी की सजा हुई। फांसी के तख्ते पर भी उन्होंने वेद मन्त्रों का उच्चारण किया।
14. **सुभाषचन्द्र बोस** – आजाद हिन्द फौज बनाकर देश की आजादी के लिए द्वितीय महायुद्ध के समय ब्रिटिश सेनाओं से युद्ध किया। देश को जयहिन्द का नारा दिया।

आर्य समाज के नियम

1 सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

2 ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

3 वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4 सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5 सब काम धर्मानुसार, अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

6 संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7 सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

8 अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

9 प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबक उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

10 सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परत रहना चाहिए, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

प्रकाशक

गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार- (उत्तराखण्ड)

Printed by: Bharat .: 09212390469